सम्पादकीय
रखें प्रकृति का ध्यान, चलायें वृक्षगंगा अभियान, होगा मानवता का उत्थान 2

बुद्ध पूर्णिमा
जन्मशताब्दी वर्ष के उल्लास के साथ लाखों घरों में यज्ञ हुए 4

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न, एडीलेड और पर्थ में आयोजित विशाल समारोह 6

देसंविवि से उत्तराखण्ड के शिक्षण संस्थानों में यूसीसी जागरूकता कार्यशालाओं का शुभारंभ 8

समाज निर्माण एवं सांस्कृतिक पुनरुत्थान के लिए समर्पित

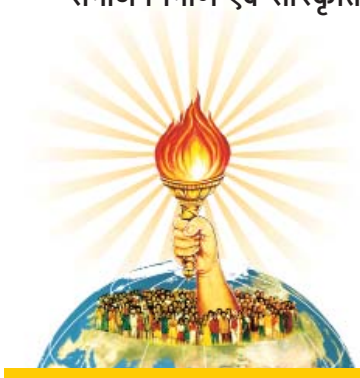

पाक्षिक

प्रज्ञा अभियान मध्य प्रदेश

संस्थापक, संरक्षक : युगऋषि पं श्रीराम शर्मा आचार्य एवं वंदनीया माता भगवती देवी शर्मा

E-mail: news@awgp.org

1 जून 2025

वर्ष : 37, अंक : 23
प्रकाशन स्थल : शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार
प्रकाशन तिथि : 27 मई 2025
वार्षिक चंदा : ₹ 80/-
वार्षिक चंदा (विदेश) : ₹ 1000/-
प्रति अंक : ₹ 4/-

RNI-NO.38653/ 1980 Postel R.No.UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26 Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26

।। ॐ भूर्भुवः स्वः तत्सवितुर्वरेण्यं भर्गो देवस्य धीमहि धियो यो नः प्रचोदयात् ।।

उस प्राणस्वरूप, दुःखनाशक, सुखस्वरूप, श्रेष्ठ, तेजस्वी, पापनाशक, देवस्वरूप परमात्मा को हम अंतःकरण में धारण करें। वह परमात्मा हमें सन्मार्ग में प्रेरित करे।

युग निर्माण सत्संकल्प-2

शरीर को भगवान का मंदिर समझकर आत्मसंयम और नियमितता द्वारा आरोग्य की रक्षा करेंगे।

युग निर्माण सत्संकल्प का पहला सूत्र ''हम ईश्वर को सर्वव्यापी और न्यायकारी मानकर उसके अनुशासन को अपने जीवन में उतारेंगे।'' लोगों में आस्तिकता और कर्तव्यपरायणता की भावना को पुष्ट करता है। इन भावनाओं का सबसे पहला प्रभाव उनके अपने सबसे निकटवर्ती स्वजन–उनके **शरीर** पर पड़ना चाहिए। यह शरीर आत्मा का निकटतम संबंधी है। दिन-रात, सोते-जागते, सुख-दुःख में यह बिना किसी शिकायत के लगातार हमारी सेवा करता है। इसकी उपेक्षा करना न केवल अविवेकपूर्ण है, अपितु कृतघ्नता भी है, इसीलिए शरीर की रक्षा और सेवा को प्रथम कर्त्तव्य माना गया है।

शरीर न तो साधना में बाधक है और न ही केवल भोग का साधन है। यह आत्मोन्नति का एक महत्त्वपूर्ण उपकरण है। इसकी देखभाल करना हमारी जिम्मेदारी है, किंतु इन दिनों दो अतिवादी दृष्टिकोण समाज में प्रचलित हैं। कुछ लोग हैं, जो शरीर को **'नश्वर'** मानकर उसकी उपेक्षा करते हैं और दूसरी ओर ऐसे लोग हैं जो जीवन भर केवल उसकी सजावट, शृंगार और सुख-सुविधाओं में रमे रहते हैं। दोनों ही दृष्टिकोण असंतुलित हैं। संतुलन का मार्ग ही शरीर के सही उपयोग की कुंजी है।

हमारी पाँच ज्ञानेन्द्रियाँ–नेत्र, कान, नाक, जिह्वा और त्वचा–ज्ञान की वृद्धि में जितनी सहायक हैं, जीवन के अनुभवों का रस लेने में भी उतनी ही सक्षम हैं। आत्मा इस अनुभव से, सेवा से मुग्ध हो जाती है और स्वयं को भूलकर शरीर में ही रमने लगती है। तब व्यक्ति शरीर को ही **'स्व'** मान बैठता है, जबकि यह केवल एक माध्यम है, स्वयं के विकास और सेवा के लिए।

शरीर हमारे साथ एक वफादार सेवक की तरह खड़ा रहता है, परंतु व्यवहार में हम इसके साथ विश्वासघात ही करते हैं। असंयमित आहार-विहार, दोषपूर्ण जीवनशैली, आलस्य और अज्ञानवश हम इसे धीरे-धीरे नष्ट करते रहते हैं। इसका प्रतिफल हमें बीमारी, अशक्ति और मानसिक तनाव के रूप में मिलता है।

स्वास्थ्य कोई रहस्य नहीं है; प्रकृति ने इसके सरल और स्पष्ट नियम बना रखे हैं। इन्हें समझना और जीवन में अपनाना ही आरोग्य की कुंजी है। आहार और विहार–यही स्वास्थ्य के दो स्तंभ हैं। आहार में संतुलित, सुपाच्य और संयमित भोजन का महत्त्व है; वहीं विहार में नियमित दिनचर्या, श्रम, विश्राम, स्वच्छता, समय पर शौच-स्नान और सुसंगत शयन आवश्यक है।

हम न तो शरीर को मोह का केंद्र बनायें और न ही उसकी उपेक्षा करें। हमें शरीर को **भगवान का मंदिर** समझना चाहिए। जैसे मंदिर को गंदा रखना अधार्मिकता मानी जाती है, वैसे ही शरीर को रुग्ण बनाना प्रकृति के नियमों का उल्लंघन है। उसका दंडपीड़ा, अपमान और असमय मृत्यु के रूप में सामने आता है।

स्वस्थ व्यक्ति ही आत्मनिर्भर होता है। वह न केवल स्वयं के लिए, बल्कि समाज के लिए भी उपयोगी सिद्ध होता है। इसके विपरीत, अस्वस्थ व्यक्ति स्वयं पर ही बोझ बन जाता है। इसलिए शरीर की रक्षा केवल व्यक्तिगत नहीं, सामाजिक और राष्ट्रीय कर्तव्य भी है।

स्वास्थ्य कोई भाग्य या संयोग नहीं है। यह हमारे संयम, श्रम और सतर्कता का परिणाम है। स्वाद की गुलामी, आलस्य, नशा, यौनाचार में असंयम, अस्वच्छता और अनियमित दिनचर्या–यही रोगों के मुख्य कारण हैं। यदि हम संयम, नियमितता, श्रमशीलता और सकारात्मक मानसिकता को अपनाएँ, तो अधिकांश बीमारियाँ पास नहीं फटकेंगी। औषधियाँ केवल सहायक हैं, वास्तविक आरोग्य जीवनशैली में छिपा है। ब्रह्मचर्य, मौन, उपवास, ध्यान, श्रम और संयम–ये सब हमारे जीवन की जीवनीशक्ति को अक्षुण्ण बनाए रखते हैं। यही शक्ति हमारे जीवन को उपयोगी, प्रभावशाली और दिव्य बनाती है।

यह शरीर अत्यंत दुर्लभ है। इसे सजाने-सँवारने का केंद्र न बनाकर आत्मिक साधना और लोकसेवा का यंत्र मानें। इसका संरक्षण करना केवल शरीर-सेवा नहीं, आत्म-सेवा है। यह आरोग्य ही वह पहला सोपान है, जिससे जीवन की समस्त ऊँचाइयाँ प्राप्त की जा सकती हैं।

राष्ट्र एवं संस्कृति की सुरक्षा के लिए अपना साधनात्मक पुरुषार्थ बढ़ाएँ

असुरता के आतंक से रक्षा के लिए साधना सुरक्षा कवच जरूरी हो गया है

जन्मशताब्दी की वेला में शान्तिकुञ्ज से हुई नई पहल

शक्तिपीठ, शाखा, परिजन भी इस अभियान से जुड़ जायें

परम पूज्य गुरुदेव के संकल्प के अनुसार अखंड ज्योति एवं परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी की इस विशिष्ट वेला में अपना राष्ट्र विकसित हो रहा है। भारतीय संस्कृति की विजय पताका सारे विश्व में फहरा रही है। ऐसे में आसुरी शक्तियाँ भी अपना प्रचंड आक्रामक रूप धारण कर रही हैं। विगत दिनों पहलगाम में हुई मानवता को शर्मसार कर देने वाली आतंकवादी घटना को भी इसी दृष्टि से देखा जाना चाहिए। देवासुर संग्राम की इन परिस्थितियों में हमारी सेना तो अपना पराक्रम दिखा ही रही है, किंतु जगत में व्याप्त आसुरी शक्तियों को निरस्त करने के लिए युग सैनिकों को भी अपना साधनात्मक पुरुषार्थ बढ़ाना होगा।

सूक्ष्म जगत में छाई विषाक्तता और जनमानस में आई विकृति के निवारण के लिए साधनात्मक पुरुषार्थ जरूरी हो जाता है। यह साधना केवल राष्ट्र की सुरक्षा के लिए नहीं, बल्कि असुरता के आक्रमण से व्यक्तिगत एवं पारिवारिक जीवन में आई विकृतियों और समस्याओं के समाधान के लिए भी बहुत जरूरी हो गयी है।

पहलगाम में 22 अप्रैल 2025 को हुए जघन्य नरसंहार की अत्यंत हृदय विदारक दुर्घटना के बाद श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी की अध्यक्षता में शान्तिकुञ्ज में वरिष्ठ कार्यकर्त्ताओं की गोष्ठी हुई। यूरोप प्रवास पर गए आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने भी इसमें वर्चुअली भाग लिया। गोष्ठी में हुए निर्णय के अनुसार शान्तिकुञ्ज द्वारा कुछ नए कार्यक्रम आरंभ किए गए हैं। देश की सभी शक्तिपीठों, शाखाओं एवं परिजनों से इन कार्यक्रमों को तत्काल प्रभाव से अपने यहाँ भी आरंभ करने का अनुरोध किया जा रहा है।

सामूहिक साधना-अखण्ड जप

शान्तिकुञ्ज के निर्देशन में जन्मशताब्दी वर्ष के निमित्त विगत वसंत पंचमी से ही पूरे देश में सामूहिक साधनाओं का क्रम आरंभ करने के लिए आह्वान किया गया है। तदनुसार शान्तिकुञ्ज में दैनिक समूह साधना का क्रम चल रहा है, जिसमें प्रत्येक अंतेवासी कार्यकर्त्ता भाई-बहिन और शिविरार्थी परिजन अनिवार्य रूप से शामिल हो रहे हैं। प्रतिदिन 2000 से अधिक साधकों की भागीदारी होती है। शान्तिकुञ्ज के निर्देशानुसार देश की विभिन्न शाखाओं, शक्तिपीठों में अखण्ड जप, सामूहिक साधना का यह क्रम आरंभ हो गया है। जहाँ अभी यह प्रारंभ नहीं हुआ हो, वहाँ भी यह क्रम आरंभ कर लेना चाहिए।

अनेक स्थानों पर सार्वजनिक यज्ञों में अखण्ड जप और सामूहिक साधनाओं का क्रम जोड़ा गया है। कई शक्तिपीठ/शाखाएँ अपने क्षेत्र में समूह साधना के विशेष कार्यक्रम आयोजित करती हैं, जिनमें हजारों साधकों की भागीदारी हो रही है।

युग निर्माण सत्संकल्प

राष्ट्र की सुरक्षा और प्रगति के लिए हर व्यक्ति को जिम्मेदार, जागरूक और अनुशासित होना होगा। परम पूज्य गुरुदेव द्वारा रचित 'युग निर्माण सत्संकल्प' का नियमित पाठ व्यक्ति को वैचारिक और भावनात्मक रूप से उत्कर्ष की ओर ले जाता है।

श्रद्धेया शैल जीजी के निर्देशानुसार विगत चैत्र नवरात्र से 'युग निर्माण सत्संकल्प' पाठ को एक आन्दोलन का रूप दिया गया है। प्रत्येक परिजन प्रातः उपासना के समय भावना की गहराइयों से इन सत्संकल्पों का पाठ करे और उन शिक्षाओं को जीवन में उतारने की साधना करे। गायत्री परिवार की गोष्ठियाँ, यज्ञ, संस्कार आदि कार्यक्रम गायत्री मंत्र के उच्चारण, गुरुवंदना, देवपूजन से आरंभ होते हैं। इनके बाद युग निर्माण सत्संकल्प का सामूहिक पाठ अवश्य किया जाये, इस आशय के पत्र शान्तिकुञ्ज से जारी कर दिये गए हैं।

... शेष पृष्ठ 3 पर

रखें प्रकृति का ध्यान, चलायें वृक्षगंगा अभियान, होगा मानवता का उत्थान

विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) से इस वर्ष हरीतिमा संवर्धन अभियान को गति देने की तैयारियों में जुट जायें

हमारा पर्यावरण धर्म

वृक्ष-वनस्पतियाँ मनुष्य के जन्म से लेकर मृत्यु तक जीवन के साथ किसी न किसी रूप में जुड़ी रहती हैं।

जीते भी लकड़ी, मरते भी लकड़ी, देख तमाशा लकड़ी का।
क्या जीवन क्या मरण कबीरा, खेल रचाया लकड़ी का।।

कुछ दशक पूर्व तक इस तरह के गीत, कविताएँ सत्संग-सभाओं में गूँजते रहते थे, किन्तु बदलती दुनिया में इस सत्य और तथ्य की परवाह न करते हुए मनुष्य कृत्रिमता की ओर बढ़ता जा रहा है और नित नए संकट में उलझ रहा है।

जैसे-जैसे हम वृक्ष-वनस्पतियों की उपयोगिता की अनदेखी करने लगे और प्रकृति से दूर होते गए, मनुष्य के जीवन में कष्ट-परेशानियाँ निरंतर बढ़ती ही जा रही हैं। धरती का बढ़ता तापमान, निरंतर गिरता जल स्तर, पिघलते ग्लेशियर, मौसम की अनिश्चितता, तरह-तरह की बीमारियाँ आदि सभी संकटों का एकमात्र कारण घटते वन और तेजी से बदलती हमारी जीवन शैली है।

गाँवों में नीम के पेड़ की शीतल छाँह में और रात को घर की छतों में खुले आसमान के नीचे आने वाली मीठी-मीठी नींद का आनन्द ही निराला होता है। घर, आँगन में लगे पेड़ों पर चहकती चिड़ियों की आवाज कितनी सुहानी लगती है। बगीचों में पेड़ों पर कूद-फाँद के साथ शरीर का व्यायाम तो होता ही है, मन को जो आनन्द मिलता है, वह जिमखानों की कसरतों में कहाँ है?

इन दिनों जीवन बड़ा बोझिल और तनावपूर्ण होता जा रहा है। इसी अनुपात में पर्यटन का प्रचलन बढ़ता जा रहा है। सुकून के कुछ क्षण पाने के लिए कश्मीर, हिमाचल प्रदेश, उत्तराखण्ड, अंडमान निकोबार, लक्षदीप जैसे प्राकृतिक सौन्दर्य वाले क्षेत्रों में पहुँचने वाले पर्यटकों की संख्या निरंतर बढ़ती जा रही है। ऐसी परिस्थितियों में जब दिल्ली, मुम्बई जैसे महानगरों की बात छोड़िये, छोटे शहरों में भी हवा जहरीली हो गयी है, तब पर्यटन क्षणिक सुखदायी हो सकता है, लेकिन स्थायी समाधान के लिए तो हम सबको पर्यावरण संरक्षण पर ही पूरा ध्यान देना होगा।

समस्या बहुत विकट है, समाधान तभी संभव है, जब हर व्यक्ति इसके प्रति जागरूक हो और पर्यावरण संरक्षण में अपना योगदान दे। आज हर गाँव-नगर में बृहद् वृक्षारोपण कर धरती माँ को हरी चूनर ओढ़ाने की आवश्यकता है। हर क्षेत्र में हरेभरे बाग-बगीचे हों, वन-उपवन हों, नदी-सरोवर हों, तभी मानवीय अस्तित्व पर छाये घोर संकट का समाधान हो पायेगा। वॉटर प्यूरिफायर, एअर प्यूरिफायर, एअर कंडीशनर और कूलरों से अपने आप को बचा लेने के प्रयास पर्याप्त नहीं हैं। हम स्थायी समाधान चाहते हैं तो बृहद् स्तर पर वृक्षारोपण कर धरती का तापमान घटाने और जलस्तर को ऊँचा उठाने की दिशा में ठोस कार्य करने ही होंगे। समय की माँग है कि हम अपना पर्यावरण धर्म पूरी ईमानदारी एवं जिम्मेदारी के साथ निभायें।

समृद्ध संस्कृति का पुनर्जीवन

भारतीय संस्कृति की यह अद्भुत विशेषता है कि हमारे ऋषियों ने जीवन की आवश्यकताओं को पर्व, त्यौहार, संस्कार, परम्पराओं के माध्यम से जीवन में सहज रूप से समाहित कर दिया है। हमारी संस्कृति में पर्यावरण का कितना ध्यान रखा गया है, वृक्ष-वनस्पतियों को कितना महत्त्व दिया गया है, यह इन्हीं परम्पराओं के माध्यम से जाना जा सकता है। हमने पेड़-पौधों, पशु-पक्षियों, नदी-पर्वतों, धरती-आकाश, सूर्य-चंद्र सभी को उनके गुणों के आधार पर देव रूप में पूजा है और इस पूजन विधान में उनके दिव्य गुणों को ग्रहण करने की प्रेरणाएँ भी जोड़ी गई हैं।

वृक्ष-वनस्पतियों को ही लीजिए, तुलसी शारीरिक स्वास्थ्य और आत्मिक पवित्रता की दृष्टि से अत्यंत दिव्य और गुणकारी है। अतः नित्य उपासना के पश्चात् तुलसी को अर्घ्य देने की, नैवेद्य में तुलसी पत्रों को शामिल करने की हमारी परम्परा है। बरगद और पीपल को ब्रह्मा, विष्णु और शिव के रूप में पूजा जाता है। वट सावित्री के दिन बरगद की पूजा की जाती है। भगवान शिव की पूजा में बेल, धतूरा का विशेष महत्त्व है। आँवला नवमी पर आँवले के वृक्ष की पूजा होती है। हनुमान जी को आक के फूलों की माला चढ़ाई जाती है। कदंब को भगवान कृष्ण के साथ जोड़ा गया है। करमा पूजा के दिन झारखंड और बिहार के आदिवासी समुदायों में करमा वृक्ष की डाली की विशेष पूजा की जाती है। ऐसी प्रथा-परम्पराएँ प्रायः पूरे देश में प्रचलित हैं।

वृक्ष गंगा अभियान

आज प्रशासन एवं स्वयंसेवी संगठनों द्वारा वृक्षारोपण, हरीतिमा संवर्धन के लिए अनेक अभियान चलाए जाते हैं, लेकिन इनमें से दशांश प्रयास भी सफल हो जाते तो परिस्थितियाँ कुछ और ही होतीं। लेकिन अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा चलाया जा रहा वृक्षगंगा अभियान अनूठा है, अद्वितीय है। हमने अपनी प्राचीन ऋषि परम्परा के अनुरूप वृक्षारोपण अभियान के साथ लोगों की भावनाओं को जोड़ा है, जिसके परिणामस्वरूप हमें उत्कृष्ट परिणाम भी मिले हैं। गायत्री परिवार के प्रयासों से सैकड़ों वीरान पहाड़ियाँ हरीभरी हो गई हैं। कोलकाता, वडोदरा, मोडासा, अहमदाबाद, दिल्ली, बारां, छत्रपति संभाजी नगर, जहानाबाद, बोकारो आदि शहरों में हमारे अनेक युवा संगठन साप्ताहिक वृक्षारोपण कार्यक्रम चलाकर न केवल नए वृक्ष लगा रहे हैं, बल्कि उनके सिंचन, संरक्षण का भी ध्यान रख रहे हैं।

हर वर्ष की तरह इस वर्ष भी एक नए उत्साह और संकल्प के साथ अपने वृक्षगंगा अभियान को गति दी जानी है। विश्व पर्यावरण दिवस (5 जून) से ही हर क्षेत्र में गतिविधियाँ आरंभ हो जायेंगी। गायत्री परिवार द्वारा गुरुपूर्णिमा (10 जुलाई 2025) से श्रावणी पूर्णिमा (9 अगस्त 2025) तक का एक महीना वृक्षारोपण मास के रूप में मनाया जाता है। इस एक माह में हर क्षेत्र में सघन वृक्षारोपण किया जाता है। यह समय दृढ़ संकल्प के साथ इस अभियान को प्रभावी बनाने की योजना बनाने और कार्यक्रम सुनिश्चित करने का है, जन-जन की आस्थाओं को वृक्षारोपण अभियान के साथ जोड़कर लगाए जाने वाले पौधों की सुरक्षा सुनिश्चित करने का है। हमारी पूर्व तैयारी जितनी अच्छी होगी, हमारा वृक्षारोपण अभियान उसी अनुपात में सफल और प्रभावशाली होगा।

विशेषज्ञों का सहयोग लीजिए

यह वैज्ञानिक युग है, विशेषज्ञों का युग है। वृक्षारोपण अभियान को सफल बनाने के लिए भी कई तरह की तकनीकें अपनाई जा रही हैं। कभी शहरों में सजावट की दृष्टि से वृक्षारोपण होता था, आज मिश्रित वनों की परम्परा चल पड़ी है। मियावाकी पद्धति से विभिन्न तरह के पौधों का मिश्रण कर सघन वनों का निर्माण किया जा रहा है। कहा जाता है कि प्रकृति स्वयं को स्वतः ही सँवार लेती है, आवश्यकता है कि हम उसके साथ छेड़खानी करना बंद कर दें। विगत दिनों कोरोना काल में इस सत्य का अनुभव हम सभी ने किया है, जब प्रकृति के साथ हस्तक्षेप नहीं हुआ तो प्रदूषण स्वतः ही दूर हो गया था। इस दृष्टि से पर्यावरणविदों, विशेषज्ञों की सलाह प्रभावशाली सिद्ध होगी।

जीवन शैली बदलनी होगी

पर्यावरण प्रदूषण में आज की बदलती जीवन शैली का बहुत बड़ा प्रभाव है। जब तक जीवन शैली नहीं बदलती, हमारे प्रयास अधूरे ही रहेंगे। इस संदर्भ में विस्तृत चर्चा अगले अंक में करेंगे।

वृक्षारोपण अभियान के विविध प्रकल्प

तरुपुत्र/तरुमित्र गायत्री महायज्ञ : वर्षाकाल में गाँव, नगर पर्वत, पठारों के वीरान क्षेत्रों में बृहद् वृक्षारोपण करना, अत्यंत भावप्रधान गायत्री महायज्ञों के साथ मित्रभाव से अथवा पुत्रभाव से वृक्षों की पौध का विधिवत पूजन कर उन्हें श्रद्धापूर्वक रोपने की योजना है। इन महायज्ञों में परिजनों द्वारा एक-एक वृक्ष को गोद लेकर रोपा जाता है तथा उसके संरक्षण-पोषण की व्यवस्था की जाती है। लोग यह वृक्ष अपने परिजनों की पुण्य स्मृति में; जन्मदिन, विवाहदिन, दीक्षादिवस जैसे विशेष अवसरों की स्मृति में लगाते हैं। विगत दिनों ऐसे सामूहिक कार्यक्रमों में 24 से लेकर 5000 तक की संख्या में वृक्ष लगाए गए हैं। बड़े क्षेत्रों की तार फेंसिंग कर उनकी सुरक्षा और सिंचाई की व्यवस्था भी की जाती है।

माताजी की बाड़ी - प्रत्येक देव परिवार, जिनके पास आँगन/छत/बालकनी में 3 फीट X 3 फीट की जगह उपलब्ध हो, वे माताजी की बाड़ी (घरेलू रोपणी) में 50 पौधे अपने यहाँ स्थापित करें तथा अगले 2-3 वर्षों तक उन पौधों का पालन पोषण कर बड़ा कर लें।

बाल वाटिका - पर्यावरण के प्रति बच्चों को जागरूक करने के लिए बाल संस्कारशाला के एवं अन्य बच्चों को अपने घर बाल वाटिका तैयार करने की प्रेरणा दी जाये। पौधे बड़े होने पर उनको माँ भगवती स्मृति उपवन या अन्य स्थान पर स्थानांतरित किया जा सकता है। बच्चों के बड़े होने पर ये विकसित वृक्ष उन्हें एक शानदार परोपकारी कृत्य का गौरव बोध करायेंगे।

श्रद्धा रोपणी - प्रत्येक शक्तिपीठ अपने यहाँ एक 10 फीट X 10 फीट की रोपणी तैयार करें, जिसमें 500-1000 पौधे तैयार हो सकते हैं। इन पौधों का उपयोग जन्मदिन, विवाहदिन जैसे अवसरों पर तरुप्रसाद के रूप में किया जा सकता है।

नोट : माताजी की बाड़ी, बाल वाटिका और श्रद्धा रोपणी में विकसित किए गए पौधों का उपयोग अगले वर्ष माताजी की जन्मशताब्दी की स्मृति में माँ भगवती स्मृतिवन/उपवन के निर्माण में किया जा सकता है।

माँ भगवती स्मृति उपवन - परम वंदनीया माताजी की जन्म शताब्दी के उपलक्ष्य में बृहद् वृक्षारोपण हेतु माँ भगवती स्मृति उपवन का निर्माण अपने क्षेत्र में खाली भूमि/टेकरी/पहाड़ी/विद्यालय/नदी के तट पर किया जा सकता है।

धार्मिक आस्थाओं का पोषण - हमारे समाज में वृक्षों के प्रति गहरी धार्मिक आस्था है। अलग-अलग ग्रह, नक्षत्र के साथ अलग-अलग वृक्ष का संबंध है। लोग ग्रह-दोष निवारण के लिए और विविध व्रत-त्यौहारों पर पुण्यलाभ के लिए वृक्षों का बड़ी श्रद्धा के साथ पूजन करते हैं, अतः श्रीराम स्मृति उपवनों, बगीचों, तालाब के किनारे, मंदिरों में इस तरह के वृक्षों का रोपण पर्यावरण संरक्षण और आस्था संवर्धन दोनों दृष्टि से उपयोगी होगा। **ग्रह वाटिका, नक्षत्र वाटिका, गुरु के बाग, तीर्थंकर वाटिका** जैसी वाटिकाओं से संबंधित वृक्षों की जानकारी और उनकी रोपण विधि की जानकारी प्राप्त करनी हो तो वह शान्तिकुञ्ज के उद्यान विभाग से प्राप्त की जा सकती है।

पंचवटी, त्रिवेणी रोपण - धार्मिक दृष्टि से राजस्थान प्रांत में दिया संगठन द्वारा पंचवटी रोपण अभियान चलाया जा रहा है। अनेक स्थानों पर त्रिवेणी रोपण का बड़ा महत्त्व है। हर गाँव, मोहल्ले में इस प्रकार के वृक्षारोपण का प्रचलन बढ़ाया जा सकता है।

तुलसी वृन्दावन - घर-घर में तुलसी के बिरवे की स्थापना एवं तुलसी के पौधों का वितरण।

गमलों में स्वास्थ्य - सामान्य स्वास्थ्य हेतु चयनित 20 वनौषधियों को घर पर गमलों में रोपना। इसके अंतर्गत स्वास्थ्य संरक्षण एवं जीवनी शक्ति संवर्धन के लिए गमलों में तुलसी, अमृता (गिलोय), घृतकुमारी (एलोवेरा), आज्ञाघास, वासा (अडूसा), हल्दी, अदरक, कालमेघ, शरपुंखा आदि का रोपण किया जा सकता है।

शाक वाटिका - रसायन रहित, पोषक, स्वास्थ्यवर्धक शाक उपलब्ध कराने के लिए घर के आँगन में शाक वाटिका लगाना। यह कार्य हरीतिमा संवर्धन में भी सहायक होगा।

बीज बम - इस मौसम में उपलब्ध फलों यथा आम, जामुन, बेल आदि के बीजों को गोबरयुक्त मिट्टी के छोटे-छोटे गोलों के बीच में रखना, गोलों को सुखाना और उपयुक्त वातावरण में आसपास के खाली स्थानों में, जंगलों में उचित स्थान पर रख देना। वर्षा होते ही वे अंकुरित और स्वतः ही विकसित होने लगेंगे।

एक परिजन एक वृक्ष - उपरोक्त कोई योजना न अपनाएँ तो जैसे भी संभव हो, परिवार का हर परिजन एक वृक्ष अवश्य लगाए और कम से कम एक वर्ष तक उसकी पूरी देखभाल करे।

शान्तिकुञ्ज से मार्गदर्शन प्राप्त करने के लिए संपर्क कीजिए –
E-mail: youthcell@awgp.org
Phone no : 9258360652 Whatspp- 9258360962

गंगा सप्तमी के दिन भागीरथी जलाभिषेक अभियान

मध्य प्रदेश में हुए जलस्रोतों की स्वच्छता और जागरूकता परक कार्यक्रम

गंगा सप्तमी (4 मई 2025) के पावन अवसर पर शान्तिकुञ्ज के निर्देश और मार्गदर्शन में निर्मल गंगा जन अभियान के अंतर्गत देशभर में जल स्रोतों की सफाई, संरक्षण और जनजागरण कार्यक्रमों का आयोजन किया गया। इस महाअभियान में मध्य प्रदेश में भी नदियों, तालाबों, बावड़ियों, कुओं एवं अन्य प्राकृतिक जल स्रोतों, उनके समीप के घाटों की सफाई की गई। स्वच्छता के प्रति लोगों को जागरूक करने का अभियान भी चलाया गया।

भागीरथी जलाभिषेक अभियान के अंतर्गत मध्य प्रदेश के भोपाल, चिनकी (नरसिंहपुर) तथा जतारा में परिजनों द्वारा चलाया गया स्वच्छता अभियान

समग्र स्वच्छता पखवाड़ा

भोपाल। मध्य प्रदेश

भोपाल में खटलापुरा घाट छोटा तालाब भोपाल पर आयोजित जल शुद्धि, तट शुद्धि के कार्यक्रम में बड़ी संख्या में नैष्ठिक परिजनों ने भाग लिया। भागीरथी जलाभिषेक कार्यक्रम का शुभारंभ माँ गंगाजी की आरती आदि से किया गया। स्थानीय पार्षद श्री पप्पू विलास जी इस कार्यक्रम के मुख्य अतिथि थे। इस अवसर पर श्री रमेश नागर ने उपस्थित लोगों को जल स्रोतों को स्वच्छ बनाए रखने की प्रेरणा दी और संकल्प कराया। उन्होंने गायत्री परिवार द्वारा समग्र स्वच्छता अभियान पखवाड़ा मनाने की घोषणा की।

स्वच्छता अभियान के साथ कार्यक्रम स्थल ''स्वर्ग धरा पर लाएँगे, गंगा को स्वच्छ बनाएंगे'', ''हिंदू, मुस्लिम, सिक्ख, इसाई, जल स्रोतों को स्वच्छ रखो भाई'' जैसे नारों से गूँजता रहा। श्री अमर धाकड़ ने जल स्रोतों को स्वच्छ रखने के लिए करने योग्य कार्य एवं न करने योग्य कार्यों की विस्तार से जानकारी दी।

4 मई के स्वच्छता अभियान में सनातनी ग्रुप के प्रिंस चौहान एवं उनकी युवा टीम का गायत्री परिवार को शानदार सहयोग मिला। अंत में पार्षद पप्पू विलास जी ने गायत्री परिवार के द्वारा किए जा रहे रचनात्मक कार्यों की सराहना करते हुए सभी का उत्साहवर्धन किया। इस स्वच्छता कार्यक्रम में श्याम शर्मा जी भोपाल जिला समन्वयक के मार्गदर्शन में चला, जिसमें विनोद मालवीय, घनश्याम आमेरिया, शान्ति बारपेटे, रामप्रकाश गुप्ता, ओमकार विश्वकर्मा, घनश्याम पाटीदार, गोपाल, हर्ष बघेल, डी.के. सक्सेना आदि का प्रशंसनीय सहयोग रहा।

सतत स्वच्छता का संकल्प

नरसिंहपुर। मध्य प्रदेश

नरसिंहपुर जिले की गाडरवारा और तेंदूखेड़ा तहसीलों में नर्मदा तटों पर श्रमदान करते हुए गायत्री परिजनों ने दो घंटे का स्वच्छता अभियान चलाया। ककरा, चिनकी एवं बिल्थारी के नर्मदा घाटों पर सैकड़ों परिजन स्वच्छता अभियान में जुटे। रेत घाट के अपशिष्ट पदार्थों को एकत्रित कर उनका निस्तारण किया। इस अभियान में किसान संघ, रामरसिया भक्त मंडल, नमामि नर्मदा मंडल, पतंजलि योग महिला मंडल, प्रज्ञा मंडल आडेगाँव खुर्द, सिंहपुर छोटा, दिघोरी एवं अन्य संगठनों से जुड़े सदस्यों ने सहभागिता की। सफाई के बाद परिजनों ने हाथ में बैनर, तख्ती लेकर दुकानदारों, श्रद्धालुओं, जनसामान्य को स्वच्छता का महत्त्व बताया और स्वधर्म निभाने की प्रेरणा दी।

कार्यक्रम के अंतिम चरण में विचार गोष्ठी हुई, जिसमें तेंदूखेड़ा से श्रीकांत गुप्ता, संतोष पटेल, रामकुमार ठाकुर, वीरेन्द्र पटेल, गाडरवारा से राजेश कुमार कौरव, विनोद श्रीवास्तव, केशव पचौरी, मनोरमा श्रीवास्तव के अलावा गायत्री परिवार जबलपुर उपजोन समिति के सदस्य वृंदावन पटेल ने नर्मदा जल को पवित्र, निर्मल रखने पर विचार व्यक्त किए। इस गोष्ठी में समय-समय पर साफ-सफाई अभियान चलाकर जल स्रोतों को स्वच्छ बनाने का संकल्प लिया गया। कार्यक्रम में गायत्री परिजन अखिलेश साहू, आशीष सक्सेना, गोविन्द कौरव, गीता प्रसाद कौरव, सुरेश गुप्ता, डॉ. राजेन्द्र दुबे, शिक्षक मधुसूदन पटेल, दुर्गा प्रसाद कोरी तथा लक्ष्मी शुक्ल का सराहनीय योगदान रहा।

गायत्री परिवार शाखा करेली द्वारा नर्मदा तट रेत घाट पर सफाई अभियान चलाया गया, जिसमें डालचंद सनेडीया, शिवकुमार कौरव, राजेन्द्र पटेल, नरसिंहपुर, गोविंद नेमा, आर.एस. राजपूत, शशांक कौरव सहित स्थानीय परिजनों ने श्रमदान किया।

कुंडों की सफाई व संरक्षण

जतारा, टीकमगढ़। मध्य प्रदेश

जतारा के टानगा गाँव के सिद्ध कुंडों की सफाई करते हुए गायत्री परिजनों ने प्राकृतिक जल स्रोतों के संरक्षण हेतु प्रयास प्रारंभ किए। शाखा परिजनों ने बताया कि गायत्री परिवार गर्मियों में पेयजल संकट से लोगों को राहत दिलाने व वन्य जीवों के लिए जल उपलब्ध कराने के अभियान में जुटा है।

अन्य राज्यों में स्वच्छता अभियान की बानगी

नवाडीह (बोकारो), देवघर तथा जहानाबाद में गंगा सप्तमी के दिन चला स्वच्छता अभियान

नवाडीह, बोकारो (झारखण्ड) नवाडीह प्रखंड में युवाओं ने सामूहिक रूप से तालाबों व नदियों की सफाई की। कई गाँवों में जनजागरण के कार्यक्रमों का आयोजन कर गाँववासियों को अपने आसपास के जल स्रोतों को सदैव स्वच्छ रखने की प्रेरणा दी गई।

देवघर (झारखण्ड) जिले में गायत्री परिवार के भाई-बहिनों ने बाबा धाम देवघर के शिवगंगा परिसर की सफाई की। शक्तिपीठ देवघर के वरिष्ठ जन श्री मलेन्द्र प्र. यादव, श्री देवनारायण रजक, श्री राजाराम प्रसाद, श्री उमाकांत राय, फागु महतो, मंदाकिनी बहिन आदि ने स्वच्छता एवं जनजागरण परक कार्यक्रमों में अग्रणी भूमिका निभाई।

जहानाबाद (बिहार) में युवा इकाई प्रज्ञा युवा प्रकोष्ठ ने गंगा सप्तमी के पावन अवसर पर काको सूर्य मंदिर तालाब के तटों पर स्वच्छता एवं जनजागरण का कार्यक्रम चलाया। इस अवसर पर नवयुग सृजन के लिए कृत्संकल्पित युवाओं ने तालाब के तटों की सफाई की तथा तालाब को साफ रखने में अपना सहयोग प्रदान करने का निवेदन किया। उन्होंने कहा कि तालाब में किसी प्रकार का कूड़ा-कचरा ना फेंके, क्योंकि स्वच्छता में ही भगवान का वास होता है।

गोड्डा (झारखण्ड) जिले के **पोड़ैयाहाट में** गायत्री परिवार द्वारा निर्मल गंगा अभियान के अंतर्गत चीर नदी में अवस्थित गुढ़मेश्वर धाम मंदिर पोड़ैयाहाट के घाटों की सफाई की गई।

कोलकाता (प. बंगाल) में गायत्री परिवार यूथ ग्रुप कोलकाता ने गंगा सप्तमी के विशेष अवसर पर अपने नियमित साप्ताहिक गंगा तट शुद्धि अभियान का 389वाँ सप्ताह मनाया। उस दिन लखी घाट, रिशरा की सफाई की गई।

उत्तर प्रदेश में पूरनपुर (पीलीभीत), सुल्तानपुर व अन्य अनेक स्थानों पर स्वच्छता एवं जनजागरूकता परक कार्यक्रमों का आयोजन हुआ, जिनमें सैकड़ों कार्यकर्त्ताओं ने भाग लिया। पूरनपुर में गोमती उद्गम स्थल पर दीपयज्ञ, आरती व गंगा चालीसा के साथ जल स्रोतों की शुद्धि की गई।

24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ में उभरा संकल्प

अनुयाज में 24 गाँवों में आयोजित होंगे सार्वजनिक यज्ञ, हर गाँव में मण्डल बनेंगे

महिदपुर, उज्जैन। मध्य प्रदेश

गुरु दीक्षा के दिन को जीवन में सौभाग्य के उदय के दिन के रूप में सदा याद रखा जाना चाहिए। दीक्षा के साथ व्यक्ति का नया जन्म हो जाता है, अतः इस दिन को भी जन्मदिन के रूप में मनाया जा सकता है।

शान्तिकुञ्ज के टोली नायक श्री प्रमोद बार्चे ने महीदपुर में आयोजित 24 कुण्डीय गायत्री यज्ञ में दीक्षा संस्कार के अवसर पर उपरोक्त प्रेरणाएँ दीं। इस अवसर पर उन्होंने वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी की विशेषताओं पर प्रकाश डालते हुए बताया कि सद्गुरु वही है, जो अपने शिष्य को तप, प्राण और ज्ञान का अनुदान दे सके। गुरु दानी, ज्ञानी और तपस्वी होना चाहिए।

श्री बार्चे जी ने यज्ञ के विदाई समारोह में उपस्थित याजकों को अपने में देवत्व के गुणों को बढ़ाने, संगठित रहने, बेटियों को बहकावे में न आने, रीति-रिवाजों को सरल बनाने, नियमित 3 माला गायत्री मंत्र जप करने का संकल्प दिलाया।

यज्ञ के अनुयाज संकल्प के अंतर्गत समीपस्थ 24 गाँवों में सामूहिक गायत्री यज्ञ आयोजित करने, प्रज्ञा मंडल एवं महिला मंडल गठन का संकल्प लिया।

राष्ट्र एवं संस्कृति की सुरक्षा के लिए साधना पुरुषार्थ

(..... पृष्ठ 1 से आगे)

राष्ट्र-रक्षा कवच हेतु नादयोग साधना

बुद्ध पूर्णिमा से प्रतिदिन सायंकाल 6.00 से 6.15 बजे तक होने वाली साधना का समय अब 15 मिनट से बढ़ाकर 30 मिनट कर दिया गया है। निर्धारित साधना के पश्चात् श्रद्धेया शैल जीजी की वाणी में अपने आप को समाज का एक अभिन्न अंग मानने, सबके हित में अपना हित समझने तथा राष्ट्रीय एकता, समता के प्रति निष्ठावान रहने के भाव जगाये जाते हैं। इस भावना के साथ परमपूज्य गुरुदेव की वाणी के साथ 24 बार गायत्री महामंत्र का उच्चारण किया जाता है। **राष्ट्र की सुरक्षा व शांति हेतु एक आध्यात्मिक ब्रह्मास्त्र** के रूप में यह साधना की जा रही है।

सैन्यशक्ति संवर्धन के लिए यज्ञाहुतियाँ

आतंकवादियों के विरुद्ध भारत सरकार द्वारा चलाया गया 'ऑपरेशन सिंदूर' अभी समाप्त नहीं हुआ है। अपने गायत्री परिवार के परिजनों की यह विशेष पहचान रही है कि वे ऐसे संकट के समय में हर तरह से अपनी भूमिका का निर्वाह करने में बढ़ चढ़कर आगे आते रहे हैं। समय की माँग है कि वर्तमान परिस्थितियों में देश की रक्षा हेतु सीमाओं पर डटे सैनिकों में शक्ति का संचार हो, उनमें शौर्य, पराक्रम, आत्मबल एवं देश की सुरक्षा का भाव सदा बना रहे, इस संकल्प और भावना के साथ शक्तिपीठों/प्रज्ञा संस्थानों में होने वाले तथा अन्य यज्ञों में भी विशेष आहुतियाँ समर्पित करें। इन आहुतियों का मंत्र है:-

ॐ त्वया मन्यो सरथारुजन्तो, हर्षमाणा हृषितासो मरुत्वन।
तिग्मेषवआयुधा संशिशाना, उप प्रयन्तु नरो अग्निरूपाः, स्वाहा।।
इदं सैन्यशक्तिसमुत्कर्षाय, इदं न मम।।

जनजागरण यात्राएँ

प्रत्येक परिजन की राष्ट्रीय भावना को जगाने और सामाजिक सुरक्षा के प्रति जागरूकता बढ़ाने के भाव के साथ शान्तिकुञ्ज में प्रतिदिन रैली निकाली जाती है। ऑपरेशन सिंदूर के प्रथम दिन से यह क्रम आरंभ हुआ है। अनेक अन्य क्षेत्रों में भी इस प्रकार की जनजागरण यात्राएँ निकालकर परिजनों ने अपनी सजगता और राष्ट्रीय भावनाओं का परिचय दिया है।

घर-घर जनसंपर्क अभियान चलाएँ घर-घर सुरक्षा कवच बनाएँ

जन्मशताब्दी की वर्तमान वेला में हम परिवर्तन के महान क्षणों से गुजर रहे हैं। ऐसी परिस्थितियों में दैवी अनुग्रह की विशेष आवश्यकता होती है। द्वापर युग में भगवान श्रीकृष्ण ने इंद्र के कोप से ब्रजवासियों को बचाने के लिए गोप-ग्वालों से लाठी लगवाकर गोवर्धन पर्वत उठवाया था। वर्तमान समय में कुछ ऐसा ही प्रयोग गायत्री परिवार के परिजन भी कर रहे हैं।

परिजन घर-घर अखण्ड ज्योति, युग निर्माण योजना, प्रज्ञा अभियान आदि पत्रिकाएँ पहुँचाने जाते हैं। वे जिन परिवारों में जाते हैं, उनके घर के सभी सदस्यों को साथ बिठाकर युग संकटों से बचाव के लिए रक्षा कवच तैयार करने के भाव से परम पूज्य गुरुदेव की आवाज के साथ 24 बार गायत्री महामंत्र का सामूहिक उच्चारण करते हैं। परिजन नए-नए घरों में जाकर भी ऐसी प्रेरणाएँ दे रहे हैं। उनका विश्वास है कि ऐसे प्रयोगों से लोगों में नियमित गायत्री उपासना का भाव जागेगा, जो उन्हें उनकी व्यक्तिगत, पारिवारिक एवं सामाजिक कठिनाइयों का समाधान और उनका सामना करने की शक्ति देगा।

बुद्ध पूर्णिमा : जन्मशताब्दी वर्ष के उल्लास के बीच लाखों घरों में गायत्री यज्ञ हुए

नियमित उपासना, वृक्षारोपण, नशामुक्ति जैसी प्रेरणा तथा सैन्यशक्ति संवर्धन की प्रार्थना के साथ दी गईं विशेष आहुतियाँ

अखिल विश्व गायत्री परिवार द्वारा बुद्ध पूर्णिमा के दिन आयोजित राष्ट्रव्यापी 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना' अभियान हर वर्ष की भाँति भरपूर उत्साह के साथ सम्पन्न हुआ। प्राथमिक स्तर पर मध्य प्रदेश, छत्तीसगढ़, राजस्थान आदि प्रांतों से प्राप्त हो रहे समाचारों में परिजनों ने लक्ष्य से कहीं अधिक घरों में यज्ञ कराये जाने की सूचना दी है।

इस वर्ष जन्मशताब्दी वर्ष की सक्रियता और ज्योति कलश यात्राओं की लोकप्रियता गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान की सफलता का बड़ा कारण बनी। इसके साथ पहलगाम में हुई आतंकी घटना ने भी लोगों में आसुरी शक्तियों के आक्रमण से बचाव के लिए युगऋषि के दिव्य संरक्षण में आने और यज्ञ-उपासना के माध्यम से सुरक्षा कवच बनाने का भाव लोगों में जगाया।

गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ-उपासना अभियान में श्रद्धालुओं ने दैहिक, दैविक, भौतिक तापों से मुक्ति के लिए प्रार्थनाएँ कीं, पर्यावरण में छाई विषाक्तता के शमन के लिए विशेष आहुतियाँ दी गईं। जगह-जगह 'ऑपरेशन सिंदूर' की सफलता की कामना और सैन्यशक्ति संवर्धन के लिए विशेष आहुतियाँ भी समर्पित की गईं। लोगों को वृक्षारोपण, नशामुक्ति जैसी मार्मिक प्रेरणाएँ भी दी गईं। प्रस्तुत हैं प्राथमिक स्तर पर प्राप्त मध्य प्रदेश प्रान्त के कुछ समाचार।

बुद्ध पूर्णिमा के दिन बाँये अलीराजपुर और दायें ग्वालियर के घरों में गायत्री यज्ञ करते परिजन

मध्य प्रदेश के हर जिले में दृढ़ संकल्प और सुनियोजित प्रयासों से मिली शानदार सफलताएँ

15000 **भोपाल। मध्य प्रदेश**

बुद्ध पूर्णिमा की प्रातः वेला में भोपाल जिले के 15 हजार घरों में गायत्री महामंत्र, महामृत्युंजय मंत्र और सैन्यशक्ति संवर्धन के लिए यज्ञ भगवान को आहुतियाँ समर्पित की गईं। यज्ञ करने वाले श्रद्धालुओं को वृक्षारोपण, जलसंरक्षण, स्वच्छता रखने और नशा न करने के संकल्प दिलाए गए।

5000 **बड़वानी। मध्य प्रदेश**

युवा प्रकोष्ठ समन्वयक श्री लखन विश्वकर्मा ने बताया कि बड़वानी जिले में बुद्ध पूर्णिमा के अवसर पर 5000 घरों में यज्ञ हुए। बड़े सुनियोजित ढंग से यज्ञ अभियान का क्रियान्वयन किया गया। जिले की सभी नौ तहसीलों ने अपने लक्ष्य के अनुसार यज्ञ सम्पन्न कराए। बड़वानी में 1100, अंजड़ में 1100, सेंधवा में 1100, ठीकरी में 500, राजपुर में 500, खेतिया में 500, वरला में 300, निवाली में 200 से अधिक परिवारों में यज्ञ होने की प्रारंभिक सूचना मिली है।

4255 **ग्वालियर। मध्य प्रदेश**

बुद्ध पूर्णिमा (12 मई) के दिन ग्वालियर उपजोन के 4255 घरों में एक साथ यज्ञ हुए। ग्वालियर जिले में 1275, दतिया में 329, भिंड में 1500, मुरैना में 860 श्योपुर में 291 घरों में यज्ञ हुए। इन यज्ञों में लोगों ने घर-परिवार की सुख, शान्ति एवं राष्ट्र की प्रगति व समृद्धि की कामना के साथ गायत्री मंत्र और महामृत्युंजय मंत्र से यज्ञाहुतियाँ समर्पित कीं। समय की माँग के अनरूप सैन्य शक्ति संवर्धन एवं मनोबल वृद्धि के लिए पाँच विशेष आहुतियाँ भी समर्पित की गईं।

ग्वालियर के पाँचों पीठों पर कई सप्ताह पूर्व से यज्ञ की व्यापक तैयारियाँ की गई थीं। गायत्री शक्तिपीठ तानसेन नगर के श्री कमलेश गुप्ता द्वारा यज्ञ किट वितरित किए गए। प्रज्ञापीठ कंपू के श्री शिववीर सिंह चौहान द्वारा प्रत्येक कॉलोनी में यज्ञ विधि संचालन हेतु प्रपत्र बाँटे गए। गायत्री चेतना केंद्र के श्री संजय शर्मा ने घर-घर यज्ञ सम्पन्न कराने हेतु आचार्यों की व्यवस्था बनाने में प्रमुख योगदान दिया। इस अभियान को सफल बनाने में सर्वश्री वी.के. गुप्ता, देवेंद्र सेंगर, गणपत मिश्र, पिंटू शर्मा, जिला समन्वयक बलवीर परिहार व उपजोन प्रभारी पं. डी.पी. लावनिया आदि कार्यकर्त्ताओं ने पूरे मनोयोग से सहयोग किया।

3000 **उज्जैन। मध्य प्रदेश**

बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर उज्जैन जिले के 3000 से अधिक घरों में गायत्री यज्ञ हुए। यज्ञाचार्यों ने इन कार्यक्रमों में लोगों को वातावरण की विषाक्तता, मानसिक विकृतियाँ और सामाजिक तनाव को कम करने के लिए यज्ञ के साथ नियमित रूप से सद्बुद्धि की देवी माँ गायत्री की उपासना, साधना करने आह्वान किया। यज्ञों में गायत्री महामंत्र व महामृत्युंजय मंत्र के साथ ऋग्वेद के मंत्र 10/84/1 से सैन्य-शक्ति संवर्धन हेतु विशेष आहुतियाँ समर्पित की गईं।

उज्जैन के एक घर में यज्ञ करते परिजन

उज्जैन नगर एवं कोठी महल में 550, उज्जैन ग्रामीण में 55, खाचरोद में 525, बड़नगर में 85, नागदा में 1050, महिदपुर में 20, झारड़ा में 80, माकड़ौन में 500, तराना में 210 घरों में गायत्री यज्ञ आयोजित किए गए। यह अभियान जनचेतना, राष्ट्रप्रेम और आध्यात्मिक साधना का संगम बनकर उभरा।

4702 **जिला कारागार में भी**

देवास। मध्य प्रदेश

देवास के मीडिया प्रभारी श्री विक्रम सिंह चौधरी ने देवास जिले के 4702 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न कराने की सूचना दी है। देवास तहसील में 1829, हाटपिपल्या में 525, कन्नौद में 604, बागली में 309, सोनकच्छ में 1170, खातेगाँव में 1152, सतगाँव में 25, टोंकखुर्द में 27 और उदयनगर में 114 पंजीकृत घरों में यज्ञ कराए गए। जेल अधीक्षक हिमानी मनवारे के मार्गदर्शन में जिला कारागार में बंदियों ने यज्ञाहुति दी।

2508 **अलीराजपुर। मध्य प्रदेश**

बुद्ध पूर्णिमा (12 मई 2025) के दिन अलीराजपुर जिले में गायत्री परिवार का राष्ट्रीय अभियान 'गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ' बड़ी श्रद्धा और उत्साह के साथ संपन्न हुआ। जिले में कुल 2508 घरों में गायत्री यज्ञ सम्पन्न हुए। अलीराजपुर तहसील में 724, जोबट में 718, छकतला में 382, सोडवा में 174, बोरी में 118, बरझर में 102, कट्ठीवाड़ा में 55, उदयगढ़ में 76, खट्टाली में 64, आम्बुआ में 53, भाबरा व नानपुर में 21-21 घर-परिवारों में यज्ञ सम्पन्न कराए गए। समग्र अभियान राष्ट्र निर्माण, पर्यावरण शुद्धिकरण एवं आध्यात्मिक नवजागरण की भावना से प्रेरित रहा। वैदिक मंत्रोच्चार और गायत्री मंत्र की आहुतियों से वातावरण गुंजायमान हो उठा। घर-घर, गाँव-गाँव 'हम बदलेंगे, युग बदलेगा।' के नारों ने युग परिवर्तन का आध्यात्मिक उल्लास सृजित किया।

1258 **खिलचीपुर, राजगढ़। मध्य प्रदेश**

12 मई 2025, सोमवार को बुद्ध पूर्णिमा के पावन अवसर पर गृहे-गृहे गायत्री यज्ञ अभियान के अंतर्गत राजगढ़ जिले के विभिन्न क्षेत्रों में 1258 परिवारों में यज्ञ आयोजित किए गए। राजगढ़ क्षेत्र में पूर्व ऊर्जा मंत्री श्री प्रियव्रत सिंह खींची ने राजमहल परिसर में गायत्री यज्ञ करते हुए अभियान का श्रीगणेश किया।

गायत्री शक्तिपीठ छापीहेड़ा क्षेत्र में 374 घरों, सनखेड़ा में 145 घरों में और खिलचीपुर क्षेत्र में 839 घरों सहित कुल 1258 परिवारों में एक साथ यज्ञ सम्पन्न हुए। इस पुनीत यज्ञ अभियान को सफल बनाने में परिव्राजक पं. सुनील शर्मा व उनके परिवार ने विशेष भूमिका निभाई। गायत्री शक्तिपीठ खिलचीपुर के व्यवस्थापक एवं अभियान संयोजक श्री कन्हैयालाल शर्मा जी ने बताया कि इस यज्ञ अभियान के माध्यम से क्षेत्र में अध्यात्म, सद्भाव और युग निर्माण के संदेश को जन-जन तक पहुँचाया गया।

दो गाँवों में की गई समूह साधना भी

रतलाम। मध्य प्रदेश

बुद्ध पूर्णिमा के दिन रतलाम जिले के 266 घरों में गायत्री यज्ञों का आयोजन हुआ। इन यज्ञों में ऑपरेशन सिंदूर की सफलता का उत्सव मनाया गया और भारतीय सेना के शौर्य को नमन किया गया। रतलाम शहर के 54 घरों में और जावरा में लगभग 100 घरों में यज्ञ हुए। श्री अर्जुन सिंह चौहान ने बताया कि ग्राम नायन एवं गुंदीपाड़ा में यज्ञ के साथ समूह साधना का कार्यक्रम भी रखा गया था।

मानव जीवन की गरिमा का बोध कराती प्रज्ञा पुराण कथा

युवा पीढ़ी को खूब प्रभावित कर रही है मातृशक्ति की वाणी

खरगोन। मध्य प्रदेश

देवग्राम घोटिया में 1 मई 2025 से प्रज्ञा पुराण कथा का आयोजन आरंभ हुआ। कथा व्यास बहिन सुनीता पाटीदार ने दूसरे दिन अपने युग संदेश में मानव जीवन की गरिमा समझाते हुए अत्यंत मार्मिक प्रेरणाएँ दीं। उन्होंने कहा कि हर व्यक्ति के भीतर प्रतिभा का विपुल भंडार है, पर नकारात्मक सोच और कुविचारों के बोझ के कारण वह दबा रह जाता है। उन्होंने उदाहरण देते हुए समझाया कि जैसे लकड़ी पानी पर तैरती है, पर यदि उसके साथ पत्थर बाँध दिया जाए तो वह डूब जायेगी। वैसे ही मनुष्य की प्रतिभा भी नकारात्मकता के कारण दबी ही रह जाती है, प्रकट नहीं हो पाती।

सुश्री सुनीता पाटीदार ने श्रोताओं से संयम, साधना व परमार्थपरायणता को जीवन में अपनाने का आग्रह किया। कथा में उन्होंने गौ, गीता, स्वास्थ्य, संस्कार आदि अनेक विषयों के प्रति ग्रामवासियों में भरपूर आस्था जगाई। संगीत टोली द्वारा प्रस्तुत भजन ''मत कर माया का अहंकार...'' ने सभी को भावविभोर कर दिया। कथा के अंत में माया पाटीदार ने अधिक से अधिक ग्रामवासियों से सत्संग में भाग लेने की अपील की।

एक नई गायत्री शक्तिपीठ की प्राण प्रतिष्ठा हुई

युगऋषि के संकल्प के अनुरूप जनजागृति का केन्द्र बनायेंगे

खाचरोद, उज्जैन। मध्य प्रदेश

'मंदिर में युगधर्म पले, जन जागृति की ज्योति जले।' की प्रेरणा और संकल्प के साथ खाचरोद में रवि पुष्य नक्षत्र में 4 मई के दिन गायत्री शक्तिपीठ की स्थापना हुई। प्राण प्रतिष्ठा समारोह 24 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ के साथ आयोजित हुआ। शक्तिपीठ में वेदमाता गायत्री, माता सावित्री, माता कुण्डलिनी, शिव परिवार एवं 'सजल श्रद्धा-प्रखर प्रज्ञा' की प्राण प्रतिष्ठा की गई है। यह शक्तिपीठ रेलवे स्टेशन रोड पर लंगर परिवार द्वारा प्रदत्त भूमि पर निर्मित किया गया है।

खाचरोद की शक्तिपीठ में नवप्रतिष्ठित प्रतिमाएँ

4 एवं 5 मई को आयोजित प्राण प्रतिष्ठा समारोह श्री राजेंद्र द्विवेदी की टोली ने सम्पन्न कराया। इस अवसर पर शक्तिपीठ को युगऋषि की संकल्पना के अनुरूप जनजाग्रति केन्द्र के रूप में विकसित करने की प्रेरणाएँ दी गईं। आयोजकों ने बताया कि शक्तिपीठ पर संस्कार परम्परा के पुनर्जीवन, बाल संस्कारशाला संचालन, व्यसन उन्मूलन, प्रत्येक गाँव में प्रज्ञा मंडलों का गठन जैसे कार्यक्रमों को प्रमुखता दी जाएगी।

जाग्रत् जनशक्ति

आज अणुशक्ति हिंसा का सबसे समर्थ आधार माना जाता है। वह दिन दूर नहीं, जब जाग्रत् जनशक्ति को प्रगति का सबसे बड़ा माध्यम समझा जाएगा।

- महात्मा विनोबा भावे

चन्दन स्वयं घिसकर सुगन्ध देता है, भले मनुष्यों का यही काम है।

108 कुण्डीय नारी सशक्तीकरण गायत्री महायज्ञ

मातृशक्ति के विराट स्वरूप एवं आज के युगधर्म का बोध कराता ऐतिहासिक आयोजन

सीहोर। मध्य प्रदेश

दिनांक 27 से 30 अप्रैल 2025 की तिथियों में सीहोर में शक्ति संवर्धन 108 कुण्डीय गायत्री महायज्ञ सम्पन्न हुआ। यह कार्यक्रम नारीशक्ति प्रधान था। शान्तिकुञ्ज से आई सुश्री दीना त्रिवेदी की टोली ने इसे सम्पन्न कराया। शान्तिकुञ्ज की विशिष्ट प्रतिनिधि आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी का दीपयज्ञ के समय आगमन और नारी उत्कर्ष के लिए दिया गया उनका संदेश कार्यक्रम का प्रमुख आकर्षण था।

आदरणीया शेफाली जीजी ने परम वंदनीया माताजी के जन्मशताब्दी वर्ष के उपलक्ष्य में बड़ा मार्मिक उद्‌बोधन दिया, जिसने मातृशक्ति के प्रगाढ़ वात्सल्य की अनुभूतियाँ कराते हुए श्रोताओं को भावविभोर कर दिया। उन्होंने कहा कि परम वंदनीया माताजी का जीवन एक आदर्श नारी का जीवन है। वे इस विराट गायत्री परिवार और विश्व के प्रत्येक जीव पर अपना असीम वात्सल्य लूटाने वाली माँ और युग निर्माण योजना, विचार क्रांति अभियान का कुशल मार्गदर्शन, अखण्ड ज्योति का लेखन, अश्वमेध यज्ञों का संचालन करने वाली शक्तिस्वरूपा माँ थीं। मिशन का यह विशालकाय स्वरूप माताजी के स्नेह और वात्सल्य का ही परिणाम है। वह जगत जननी माँ अपनी साधना और वात्सल्य से हमारे योगक्षेम का वहन करते हुए प्रकृति की तरह ही हम सभी बच्चों को पोषण, संरक्षण प्रदान कर रही है।

आदरणीया शेफाली जीजी ने कहा कि माताजी का जीवन हम सभी बहिनों के लिए अनुकरणीय है। उन्हीं की तरह आत्मीयता का विस्तार करते हुए हमें नवयुग की संरचना में अपना योगदान देना है।

आदरणीया शैफाली जीजी दीपयज्ञ में उपस्थित श्रोताओं को संबोधित करते हुए

यज्ञ के उल्लेखनीय प्रसंग, प्रमुख आकर्षण

- महायज्ञ में नगर पालिका अध्यक्ष प्रिंस राठौर, विधायक एवं अनेक गणमान्य जनों ने पुष्प वृष्टि कर कलश यात्रा का स्वागत किया।
- कार्यक्रम में मध्य प्रदेश जोन समन्वयक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री जगदीशचंद्र कुल्मी, मध्य प्रदेश जोन प्रभारी श्री राजेश पटेल, उपजोन समन्वयक श्री रघुनाथ प्रसाद हजारी, जिला स्तरीय वरिष्ठ संगठकों ने भाग लिया।
- सुप्रसिद्ध कथा वाचक पंडित प्रदीप मिश्रा जी यज्ञ में पधारे। शान्तिकुञ्ज की ब्रह्मवादिनी टोली प्रमुख सुश्री दीना त्रिवेदी ने शॉल ओढ़ाकर उनका स्वागत किया। पंडित प्रदीप मिश्रा जी ने सीहोर नगर के इतिहास में पहली बार इतने विराट आयोजन हेतु शान्तिकुञ्ज एवं संपूर्ण सीहोर वासियों की तरफ से आभार प्रकट किया।
- सायंकालीन 24000 दीपकों से जगमगाते विराट दीप महायज्ञ की शोभा देखते ही बनती थी।
- सैकड़ों दीक्षा, पुंसवन, नामकरण, एवं यज्ञोपवीत संस्कार संपन्न हुए। दीक्षा लेने वालों को आयोजकों ने निःशुल्क दीक्षा सेट दिये।
- शान्तिकुञ्ज का डिजिटल डाटा प्रेजेंटेशन एवं ऑडियो बुक स्टॉल, गुरु सत्ता की जीवन परिचय प्रदर्शनी, बृहद साहित्य स्टॉल एवं सुस्वादु भोजनालय लोगों को आकर्षित करते रहे।
- खण्डवा से श्री बृजेश पटेल के संरक्षण में आई देवकन्याओं ने 15 दिनों तक पूरे नगर में घर-घर जाकर जनसंपर्क करते हुए यज्ञ का आमंत्रण पहुँचाया, युगयज्ञ में भागीदारी का आह्वान किया।

समूह साधना का सुंदर प्रयोग

इस प्रकार के सामूहिक साधना कार्यक्रम पूरे प्रदेश में करने का उत्साह उभरा

सनावद, खरगोन। मध्य प्रदेश

अक्षय तृतीया के दिन गायत्री शक्तिपीठ सनावद पर सामूहिक गायत्री महामंत्र जप का ऐतिहासिक आयोजन सम्पन्न हुआ। आयोजकों के अनुसार प्रदेश का यह पहला कार्यक्रम था, जिसमें 12 घण्टे के अखण्ड जप में 61 लाख गायत्री महामंत्र का जप हुआ। वनवासी संत स्व. डेमनिया बाबा के मार्गदर्शन में अपने जीवन में उल्लेखनीय परिवर्तन करने वाले हजारों वनवासी भाई-बहिन इस सामूहिक साधना में भाग लेने पहुँचे।

यह सामूहिक साधना समारोह जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के अंतर्गत आयोजित हुआ। उपजोन ओंकारेश्वर के चार जिले से हजारों परिजनों की उपस्थिति रही। पूर्व संध्या में 551 कलश की भव्य शोभा यात्रा निकाली गई। हम फाउण्डेशन भारत सिटी, अग्रवाल समाज, महेश्वरी समाज, व्यापारी संगठन, जयओंकार भिलाला समाज द्वारा चार कि.मी. की इस यात्रा में पुष्प

वर्षा, शरबत, नमकीन छाछ, शीतल जल से जगह-जगह स्वागत किया।

4 घंटे तक चली विशाल कलश यात्रा ने नगर में व्यसन मुक्ति और दहेज प्रथा उन्मूलन संबंधी नारे लगाए गए। नारी जागरण, वृक्षारोपण, जल संरक्षण, जैविक खेती, पशुपालन, स्वच्छता अभियान, साधना उपासना आराधना, सद्‌साहित्य के स्वाध्याय से जुड़ने, समय एवं अर्थ प्रबंधन, जीवन में नियमितता को अपनाने, व्यसन, फैशन तथा कुप्रथाओं का त्याग करने, शुद्ध सात्विक जीवन अपनाने जैसे अनेक संदेश सद्‌वाक्यों के माध्यम से दिये। यात्रा के संचालन में जिला समन्वयक जोगीलाल मुजाल्दे, सालकराम चौधरी, भैयालाल, शिवनारायण परवाल, रविंद्र दुबे, धर्मेंद्र डावर ने प्रमुख भूमिका निभाई।

सामूहिक जप में साधकों ने एक-एक घण्टे की पारियों में भाग लिया। प्रत्येक पारी में औसतन 478 भाई-बहिन शामिल हुए। 12 घंटे की साधना में 61 लाख गायत्री महामंत्र का जप किया गया।

पहलगाम की घटना में दिवंगत हुए लोगों को दी गई श्रद्धांजलि

इस साधना समारोह में शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि श्री प्रमोद बार्चे भी उपस्थित रहे। उपजोन समन्वयक श्री पन्नालाल बिरला ने बताया कि साधना का आरंभ 24 लाख मंत्र जप का पुण्य पहलगाम के आतंकी हमले में दिवंगत हुए निर्दोष नागरिकों की आत्मिक शांति, सद्‌गति के लिए अर्पित करने के संकल्प के साथ हुआ था।

उपस्थित गणमान्यों में इस प्रकार के सामूहिक साधना अभियान को पूरे प्रदेश में पहुँचाने का उत्साह उभरा है। लोकमंगल के लिए किए गए इस साधना समारोह की नगरवासियों ने भरपूर सराहना की।

शक्तिपीठ में सामूहिक विवाह, नवदम्पतियों को दीं शुभकामनाएँ

भोपाल। मध्य प्रदेश

महिला मण्डल, शान्तिकुञ्ज की प्रभारी आदरणीया शेफाली पण्ड्या जी अक्षय तृतीया, 29 अप्रैल के दिन भोपाल आईं। उन्होंने शक्तिपीठ में चल रहे 24 युगलों के आदर्श विवाह संस्कार समारोह में भाग लिया। उन्होंने सभी नवदम्पतियों को शान्तिकुञ्ज की ओर से सफल और सुखद दाम्पत्य जीवन की शुभकामनाओं के साथ साड़ी व श्रीफल भेंट किये।

शक्तिपीठ का अवलोकन

आदरणीया जीजी ने शक्तिपीठ परिसर में श्रीराम भवन निर्माण, गौशाला, साधना कक्ष, विद्यालय, युवा प्रकोष्ठ आदि का निरीक्षण कर व्यवस्थाओं की सराहना की। उन्होंने जन्म शताब्दी वर्ष 2026 के निमित्त चल रहे कार्यक्रमों तथा 14-16 नवम्बर को भोपाल में आयोजित हो रहे प्रांतीय युवा सम्मेलन की तैयारियों की समीक्षा भी की। भोपाल में शेफाली जीजी श्री महेश विजयवर्गीय की कुशलक्षेम पूछने उनके निवास पर पहुँचीं। कोलार चेतना केंद्र एवं बरखेड़ा प्रज्ञापीठ का अवलोकन किया।

शक्तिपीठ के वार्षिकोत्सव में वनवासियों की आस्था का कुम्भ

साली टांडा, बडवानी। मध्य प्रदेश

ग्राम बलवाड़ी के कृषि उपज मंडी प्रांगण में शक्ति संवर्धन 24 कुंडीय गायत्री महायज्ञ के आयोजन के साथ गायत्री शक्तिपीठ साली टांडा का वार्षिकोत्सव मनाया गया। यह शक्तिपीठ लाखों वनवासियों की गहन आस्था का केन्द्र है। अतः चार दिवसीय वार्षिकोत्सव में भारी जन सैलाब उमड़ा।

तीन कलश यात्राएँ निकलीं जो डोंगलिया पानी, आमलिया, वरला ग्राम से प्रारंभ होकर यज्ञस्थल तक पहुँचीं। वनवासी संस्कृति में अपने अंतस् के उल्लास को अभिव्यक्त करती इस कलश यात्रा से पूरा गाँव गायत्रीमय हो गया। इस अवसर पर शक्तिपीठ के संस्थापक संत स्व. डेमनिया बाबा के चित्र पर पुष्पांजलि अर्पित करने के साथ उनके द्वारा किए गए कार्यों का उल्लेख किया गया।

13 से 16 अप्रैल की तिथियों में सम्पन्न आस्था के कुम्भ का संचालन करने शान्तिकुञ्ज से श्री प्रमोद बार्चे, भावसिंह तोमर, बलिराम यादव, विनोद नेताम की टोली पहुँची थी। आरंभ में शक्तिपीठ के व्यवस्थापक श्री नरेन्द्र डावर ने शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों का स्वागत किया। तत्पश्चात् श्री बार्चे जी ने कहा कि गायत्री से श्रेष्ठ मंत्र न हुआ है और न होगा। गायत्री सद्‌बुद्धि की देवी है। गायत्री मंत्र का जप करने से मन में पवित्र भाव आते हैं, हृदय निर्मल बनता है, शरीर निरोगी रहता है और स्मरण शक्ति का विकास होता है। मन की शुद्धि के लिए गायत्री मंत्र अदभुत है।

कार्यक्रम में जिला समन्वयक श्री महेंद्र भावसार ने सामूहिक साधना अभियान को प्रबल बनाने और जन्म शताब्दी वर्ष में ग्राम-ग्राम में मंडल बनाकर व्यसनमुक्त समाज के निर्माण की प्रेरणा दी। सांस्कृतिक कार्यक्रम हुए, जिनमें स्थानीय कलाकारों ने रानी लक्ष्मी बाई, शिवाजी, रामायण आदि का शानदार नाट्य मंचन किया। राष्ट्र जागरण दीपयज्ञ के अवसर पर नशा मुक्ति के सामूहिक संकल्प कराए गए।

इस कार्यक्रम में ग्राम बलवाड़ी के कृष्ण भाई कोठारी, विकास पालीवाल, संजय भावसार, मनोज पालीवाल, व्यापारी संघ का विशेष सहयोग रहा। मध्य प्रदेश जोन भोपाल से श्री राजेश पटेल ने उपस्थित होकर जन्म शताब्दी संदेश दिया। ओंकारेश्वर उपझोन समन्वयक श्री पन्नालाल बिरला, सहायक समन्वयक डॉ. सोहन गुर्जरने भी उपस्थित होकर आयोजकों के पुरुषार्थ को प्रोत्साहित किया।

विशिष्ट उपलब्धियाँ

- खरगोन, खंडवा, आलीराजपुर, झाबुआ, धार, बुरहानपुर जिले के साथ ही गुजरात, छतीसगढ़ से श्रद्धालु यज्ञ में भाग लेने आए।
- 17000 परिजनों ने अपनी आहुतियाँ दीं।
- प्रतिदिन ८ हजार व्यक्तियों ने भोजन प्रसाद ग्रहण किया। भोजन निर्माण में नानला भाई, शीला अहिरे, सुनीता नरगावे, वन्दना जीजी, जेणु काका, गणेश मोरे, सावित्री मेहता, कलावती दीदी, रामेश्वर आर्य, कुचीया अलावे की टोली का प्रशंसनीय योगदान रहा।
- आयुष विभाग द्वारा आयुर्वेद चिकित्सा शिविर लगाया गया। डॉ. टी.एस. मेहता, डॉ. अनुरूची सोलंकी, बी.आर. सैनानी, संजय बरडे ने 350 रोगियों का निःशुल्क परीक्षण किया। लगभग एक लाख रुपये की औषधियाँ निःशुल्क वितरित की गईं।
- 1500 नए भाई-बहिनों ने दीक्षा ली।
- 300 लोगों ने नशा छोड़ने का संकल्प लिया।

ग्राम बलवाड़ी की विशाल शोभायात्रा और उसमें शामिल देव झाँकियाँ

अमेरिका और नीदरलैण्ड में ऑनलाइन संस्कार कराए

महिला मंडल सेंधवा की प्रभारी प्रीति वर्मा ने अटलांटा, अमेरिका में रह रही श्रीमती आयुषी चेतन कानूनगो का ऑनलाइन पुंसवन संस्कार संपन्न कराया। उन्होंने गर्भस्थ शिशु को सद्‌गुणी, संस्कारवान बनाने की प्रेरणाएँ दी और उसके लिए आवश्यक सूत्र भी समझाये।

खरगोन की बहिन सुनीता पाटीदार ने नीदरलैण्ड निवासी दम्पति उत्कर्ष एवं निधि शर्मा की बिटिया का नामकरण व अन्नप्राशन संस्कार कराया। बहिन दीपिका पाटीदार का इस संस्कार को सम्पन्न कराने में विशिष्ट योगदान रहा।

परमात्मचेतना में विलीन हुए श्री भगवंत सिंह

अशोकनगर। मध्य प्रदेश : गायत्री शक्तिपीठ अशोकनगर के नैष्ठिक कार्यकर्त्ता श्री भगवंत सिंह यादव भीकली वाले 6 मई 2025 को परम सत्ता में विलीन हो गए। वे सन 1986 से मिशन की सेवा में सक्रिय थे। उन्होंने अशोकनगर, चंदेरी, सेहाराई, पिपरई क्षेत्र में अपनी सेवाएँ प्रदान कीं। विद्यालयों में लगभग 500 वाङ्मय की स्थापना कराई, कई पुस्तक मेले लगाए। साहित्य विस्तार तथा पत्रिकाओं के सदस्य बनाने में उनका बड़ा योगदान था। सामान्य आर्थिक स्थिति के बावजूद लम्बे समय तक ज्ञानरथ चलाया।

जिसके पास विचारों का भण्डार है, वे कभी निर्धन तथा एकाकी नहीं रहते। - सर फिलिप सिडनी

ऑस्ट्रेलिया के मेलबर्न, एडीलेड और पर्थ में आयोजित विशाल समारोह

अखिल विश्व गायत्री परिवार के युवा युगनायक, देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का 15 अप्रैल से 27 अप्रैल 2025 तक ऑस्ट्रेलिया का एक अत्यंत सफल और ऊर्जादायी प्रवास सम्पन्न हुआ। गायत्री परिवार की कालजयी यात्रा में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का यह ऑस्ट्रेलिया प्रवास ऋषियुग्म के आशीर्वाद एवं एक दशक पूर्व ऑस्ट्रेलिया में श्रद्धेय डॉक्टर साहब एवं श्रद्धेया जीजी द्वारा गुरुकृपा से बोए गए विचार क्रांति के बीजों को पल्लवित, पुष्पित एवं पोषित करने वाला एक अतुलनीय प्रयास रहा। इस प्रवास में उन्होंने सिडनी, ब्रिसबेन, कैनबरा, मेलबर्न, एडीलेड और पर्थ में अनेक कार्यक्रमों के माध्यम से हजारों लोगों को भारतीय संस्कृति पर गौरव करने का अवसर दिया। इन कार्यक्रमों ने परिजनों में जन्मशताब्दी की विशिष्ट वेला में संगठित होकर सांस्कृतिक चेतना के उत्थान के लिए सक्रिय होने का उत्साह जगाया।

पाठक सिडनी, ब्रिसबेन, कैनबरा, मेलबर्न के समाचार प्रज्ञा अभियान के 16 मई 2025 के अंक में पृष्ठ 6,7 पर पढ़ चुके हैं। प्रस्तुत हैं मेलबर्न, एडीलेड और पर्थ में आयोजित कुछ और समाचारों का संक्षिप्त विवरण।

मेलबर्न में संगोष्ठी — हम शिक्षक हैं, प्रचारक नहीं

मेलबर्न में हुई एक कार्यकर्त्ता गोष्ठी में आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी ने पूज्य गुरुदेव से जुड़े कई संस्मरण साझा किए। इनके माध्यम से उन्होंने परिजनों से कहा कि ''वी आर ए टीचिंग इंस्टीट्यूशन, नॉट ए प्रीचिंग इंस्टीट्यूशन।'', हमें व्यक्तित्व से, आचरण से, आत्मपरिष्कार से और स्वयं में आए बदलावों के माध्यम से समाज को दिशा प्रदान करनी है।

इस गोष्ठी में ज्योति कलश यात्रा के आयोजन, स्वरूप एवं कार्यक्रम को लेकर विस्तार से चर्चा हुई। कार्यकर्त्ताओं को ज्योति कलश के आगमन की पूर्व व्यवस्था हेतु साधना अनुष्ठान के लिए प्रेरित किया गया।

आद. डॉ. चिन्मय जी नैष्ठिक परिजनों को संबोधित करते हुए

रेडियो साक्षात्कार में दी मानवीय उत्कर्ष की प्रेरणाएँ

एस.बी.एस. रेडियो

विश्व की लगभग 68 विभिन्न भाषाओं एवं 40 लाख से अधिक श्रोताओं तक जाने वाली ऑस्ट्रेलियन स्पेशल ब्रॉडकास्टिंग सर्विस 'एस.बी.एस. रेडियो' के प्रस्तोता श्री संतोष कुमार पटेल ने युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या का साक्षात्कार किया। चर्चा का विषय था 'ब्रिजिंग स्पिरिचुएलिटी एण्ड साइंस फॉर हॉलिस्टिक ग्रोथ'। इस साक्षात्कार में डॉ. चिन्मय जी द्वारा वैज्ञानिक दृष्टिकोण वाले युवा मन में अध्यात्म के प्रति उठने वाली जिज्ञासाओं के व्यावहारिक समाधान प्रस्तुत किए गए।

एफएम रेडियो पर सुश्री वाणी जी के साथ साक्षात्कार

एफ.एम. रेडियो

प्लैनेट वैली एफ.एम. 88.6 की प्रस्तोता सुश्री मृणाल जी के साथ अत्यंत सामयिक विषय 'मेंटल वेल बीइंग एण्ड इमोशनल रिजिलिएन्स इन टूडेज वर्ल्ड' पर साक्षात्कार हुआ। डॉ. चिन्मय जी ने एक मनोचिकित्सक के रूप में अपने दशकों के अनुभव, भारतीय ज्ञान परंपरा एवं आध्यात्मिक दृष्टिकोण को मिला कर साक्षात्कारकर्त्ता के प्रश्नों का अत्यंत व्यावहारिक समाधान दिया। 1987 से स्थापित प्लैनेट वैली एफ.एम. 88.6 ऑस्ट्रेलिया में अत्यंत लोकप्रिय प्लेटफॉर्म है।

हेल्प लाइन ऑस्ट्रेलिया

डिजिटल प्लेटफॉर्म 'हेल्प लाइन ऑस्ट्रेलिया' की प्रस्तोता सुश्री वाणी जी ने 'स्पिरिचुएलिटी एण्ड द गायत्री मंत्र' विषय पर आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के साथ साक्षात्कार किया।

एडीलेड — प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में 20 संगठनों की भागीदारी

युग निर्माण सत्संकल्प पाठ को एक अभियान बनाने का संकल्प उभरा

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के एडीलेड प्रवास के अंतिम दिन नगर में सक्रिय 20 से अधिक संगठनों के प्रतिनिधि एवं प्रभावशाली प्रबुद्ध वर्ग के मध्य प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन का अत्यंत सफल आयोजन हुआ। शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि के हृदयस्पर्शी उद्बोधन को सुन कर गणमान्य श्रोतागण अभिभूत हुए। अनेक संगठनों से पधारे आत्मीय जनों ने कहा कि सोशल मीडिया के वर्तमान युग में उन्होंने अनेक वक्ताओं को सुना है, पर डॉ. चिन्मय जी की प्राणवान वाणी से प्राप्त मार्गदर्शन उन्हें वर्तमान कालखंड के सबसे प्रभावी व्यक्तिव एवं वक्ता के रूप में प्रतिष्ठित करता है।

समस्त श्रोताओं ने डॉ. चिन्मय जी के संग समवेत स्वर में नवयुग के संविधान 'युग निर्माण सत्संकल्प' का पाठ किया। एडीलेड में गायत्री परिवार ने युग निर्माण सत्संकल्प पाठ को एक अभियान बनाने का संकल्प लिया।

सभा में उपस्थित सभी 20 संगठनों के प्रतिनिधियों ने आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी को सम्मानित किया। शान्तिकुञ्ज की ओर से भी समस्त संगठनों के प्रतिनिधियों और गणमान्यों को देवस्थापना के चित्र एवं युग साहित्य भेंट किये गए। इस अवसर पर एडीलेड में सक्रिय गायत्री परिवार की युवा टीम के सदस्यों का उनके अथक पुरुषार्थ के लिए अभिनंदन किया गया।

प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के विचारों का करतल ध्वनि से स्वागत करते श्रोतागण

स्वागत, श्रद्धा संवर्धन संगोष्ठी

इससे पूर्व आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी जब ऑस्ट्रेलिया प्रवास के पाँचवें शहर एडीलेड में पहुँचे तो स्थानीय परिजनों ने एअरपोर्ट पर भव्य स्वागत किया। एडीलेड पहुँचते ही सर्वप्रथम कार्यकर्त्ताओं के संग श्रद्धा संवर्धन एवं ज्योति कलश यात्रा की कार्ययोजना पर मार्गदर्शन के लिए विशेष गोष्ठी का आयोजन किया गया। इस गोष्ठी में भावी दायित्व और उनसे जुड़े सौभाग्य के विचार सुनकर सभी परिजन उत्साह, उमंग से भर उठे।

घर-घर देवस्थापना की शृंखला

घर-घर में आत्मीयता विस्तार एवं देवस्थापना के कार्यक्रमों की अत्यंत सफल और लम्बी शृंखला चली। मिशन से जुड़ी दूसरी एवं तीसरी पीढ़ी के अनेक परिवारों के सदस्यों ने ऐसा अनुभव किया कि जैसे पूज्य गुरुवर की चेतना का दिव्य प्रवाह उनके पास आ गया। हृदय में खुशी, अंतस में उल्लास लिए परिजनों ने पूज्य गुरुवर से जुड़े स्वयं के एवं अपने अग्रजों के संस्मरण का उल्लेख किया।

डॉ. चिन्मय जी के आगमन से एडीलेड में गायत्री परिजनों की टीम और अधिक सशक्त हुई। वहाँ टीम के साथ कई ऐसे परिवारों का संपर्क हुआ, जिन्हें उनके भारतवासी मित्र, परिजनों ने डॉ. चिन्मय जी के एडीलेड पहुँचने की सूचना दी थी। वे अपने नन्हें बच्चों एवं युवाओं को मिशन के साथ और घनिष्ठता पूर्वक जोड़ने की चाह के साथ शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधियों से मिलने आए थे। अपने अत्यंत व्यस्त कार्यक्रमों के बीच उन सबकी भावनाओं का सम्मान करते हुए डॉ. चिन्मय जी उन सबसे मिलने पहुँचे।

साउथ ऑस्ट्रेलिया की संसद में मिला विशिष्ट सम्मान

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी एडीलेड के सांसद माननीय श्री रसेल वोरटली जी के विशेष आमंत्रण पर एडीलेड में स्थित साउथ ऑस्ट्रेलिया की संसद में पहुँचे। वहाँ उन्हें अध्यक्ष की कुर्सी पर बिठाते हुए विशेष सम्मान दिया गया। माननीय सांसद से हुई मुलाकात ने सम्पूर्ण ऑस्ट्रेलिया में युगचेतना विस्तार के द्वार खोल दिए हैं। इस कार्यक्रम के विस्तृत समाचार विगत 16 मई 2025 के अंक में पृष्ठ 8 पर प्रकाशित किए गए हैं।

पर्थ के समाचार — इंडियन सोसाइटी ऑफ वेस्ट ऑस्ट्रेलिया से जुड़े संगठनों के बीच अत्यंत प्रभावशाली कार्यक्रम

इंडियन कम्युनिटी सेंटर, पर्थ में इंडियन सोसाइटी ऑफ वेस्ट ऑस्ट्रेलिया (इसवा) से संबद्ध 25 से अधिक संगठनों के प्रमुखों के मध्य आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का विशेष संबोधन एवं मार्गदर्शन सत्र आयोजित किया गया। डॉ. चिन्मय जी ने उपस्थित गणमान्यों को युग निर्माण योजना, विचार क्रांति अभियान एवं अखिल विश्व गायत्री परिवार के वैश्विक चिंतन एवं गतिविधियों से अवगत कराया। परस्पर चर्चा एवं संवाद का क्रम भी अत्यंत प्रभावी रहा।

कार्यक्रम के अंत में इसवा के वरिष्ठ पदाधिकारियों एवं विभिन्न संगठन प्रमुखों ने मिलकर आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी को सम्मानित किया। सभी का आग्रह था कि डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी उनके संस्थानों में भी पधार कर उनका मार्गदर्शन करें।

इस कार्यक्रम ने भविष्य में मिशन के विस्तार की अपार संभावनाओं के द्वार खोले एवं जन-जन को उत्कृष्ट प्रेरणाओं से भर दिया। सभी को युग साहित्य प्रदान किया गया एवं युगतीर्थ शान्तिकुञ्ज पधारने का आमंत्रण दिया गया।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी द्वारा सम्मानित किए गए इसवा के पदाधिकारी एवं गायत्री परिवार के कार्यकर्त्ता

पर्थ में हुआ नौ कुण्डीय यज्ञ एवं प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन

पर्थ में यज्ञ करते श्रद्धालु और यज्ञभाव के साथ जीवन जीने की प्रेरणा देते आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी

पर्थ में आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी के पहुँचने पर सर्वप्रथम कार्यक्रम नौ कुंडीय गायत्री महायज्ञ एवं प्रबुद्ध वर्ग सम्मेलन के रूप में आयोजित हुआ। इसमें भारतीय संस्कृति के प्रति समर्पित प्रबुद्ध वर्ग के गणमान्यों एवं भावनाशील परिजनों ने भाग लिया। पर्थ में सेवारत अनेक संगठनों के प्रमुख प्रतिनिधियों को भी इस महायज्ञ में आमंत्रित किया गया था।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने यज्ञ का व्यावहारिक, वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक महत्त्व बताते हुए कहा कि यज्ञ सर्वत्र सुख-शान्ति का आधार है। यज्ञ का अर्थ है सबमें आत्मभाव के दर्शन, सबके हित की कामना। यज्ञ मनुष्य को देवता बनाने का विधान है। देने का भाव यदि व्यक्ति के मन में जागता है, तो इंसान देवता बन जाता है। जो भी उपलब्ध है, वह हम बाँटे तो व्यक्ति, परिवार, समाज बेहतर बन सकते हैं।

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि पूज्य गुरुदेव पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य जी का सतयुग की वापसी का संकल्प यज्ञभाव के विस्तार से ही पूरा होगा। हमें हर व्यक्ति को सागर, नदी, वृक्ष-वनस्पतियों की तरह यज्ञीय जीवन शैली का अभ्यास कराना है।

इस कार्यक्रम ने लोगों को गायत्री परिवार के प्रति एक नया दृष्टिकोण दिया। जन्मशताब्दी वर्ष के कार्यक्रमों के प्रति लोगों का उत्साह बढ़ा।

(पर्थ प्रवास के कुछ और समाचार अगले पृष्ठ पर)

यदि आपके सौ मित्र हैं तो कम हैं, उन्हें और बढ़ाओ। यदि आपका एक शत्रु है तो बहुत ज्यादा है, उसे घटाओ। - सिडनी

कोपेनहैगन, डेनमार्क में युगचेतना विस्तार

भारतीय राजदूत से मिले शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने अपने यूरोप प्रवास में डेनमार्क की राजधानी कोपेनहैगन में भारत के राजदूत आदरणीय श्री मनीष प्रभात जी से सौजन्य भेंट की। उन्होंने पूज्य गुरुदेव पं. श्रीराम शर्मा आचार्य जी के संरक्षण, मार्गदर्शन में पूरे विश्व में भारतीय संस्कृति के पुनर्जागरण हेतु चलाए जा रहे अभियानों की जानकारी साझा की। इस अवसर पर उन्होंने प्रवासी भारतीय समुदाय में एकात्मता, नैतिक मूल्यों के संवर्धन और भारतीय संस्कृति के प्रकाश को और व्यापक रूप से फैलाने हेतु मिशन की योजनाओं का भी उल्लेख किया।

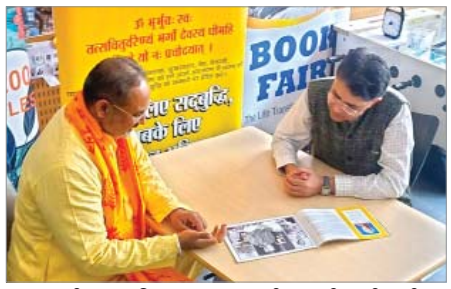

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी माननीय श्री मनीष प्रभात जी को परम पूज्य गुरुदेव का परिचय देते हुए

इस वार्ता में भारत और डेनमार्क के बीच सांस्कृतिक सहयोग को सुदृढ़ करने, प्रवासी भारतीयों में भारतीय जीवन मूल्यों और संस्कारों का अभिवर्धन करने तथा जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के अंतर्गत वैश्विक स्तर पर युग निर्माण आन्दोलन को गति देने पर विचार-विमर्श हुआ।

आदरणीय श्री मनीष प्रभात जी ने गायत्री परिवार द्वारा विश्व मानवता के उत्कर्ष के लिए किए जा रहे प्रयासों की सराहना की और इसे समाज के लिए प्रेरक पहल बताया। यह संवाद भारत और डेनमार्क के बीच सांस्कृतिक सेतु को और अधिक मजबूत करने की दिशा में एक महत्त्वपूर्ण कदम रहा।

दीपयज्ञ भारत के अमर सपूतों को दी गई श्रद्धांजलि

भारतवासियों को राष्ट्रीय एकता, अखण्डता के लिए संगठित और निष्ठावान रहने का संदेश दिया

भारत माता के अमर सपूतों की पावन स्मृति में तथा भारतीय संस्कृति की गौरवमयी विजय पताका को सशक्त बनाने के संकल्प के साथ 10 मई को कोपेनहैगन में दीपयज्ञ का भव्य आयोजन संपन्न हुआ। युगऋषि की प्रखर प्राण ऊर्जा के संवाहक शान्तिकुञ्ज प्रतिनिधि आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी की मुख्य उपस्थिति में आयोजित इस कार्यक्रम में डेनमार्क में भारत के राजदूत माननीय श्री मनीष प्रभात जी एवं हेड ऑफ चांसरी श्री देवेंद्र अरोरा जी की विशेष उपस्थिति रही। वर्तमान वैश्विक परिस्थितियों में संवेदनशील वातावरण और प्रतिबंधों के बावजूद बड़ी संख्या में प्रवासी भारतीय भाई-बहिन पूरी श्रद्धा एवं समर्पण भाव के साथ दीपयज्ञ में शामिल हुए।

मंच पर आद. डॉ. चिन्मय जी (दायें), भारतीय राजदूत माननीय श्री मनीष जी (मध्य में) तथा श्री देवेंद्र जी (बायें)

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने कहा कि आध्यात्मिक रूप से जाग्रत् समाज ही सशक्त और समरस राष्ट्र की बुनियाद है। यह दीपयज्ञ अपने देशवासियों को राष्ट्रीय एकता और अखण्डता के प्रति जागरूक, संगठित और निष्ठावान रखने का विनम्र प्रयास है। उन्होंने कहा कि हमारी सांस्कृतिक भावनाएँ प्रबल हों, तो तमाम चुनौतियों के मध्य भी एकता और श्रद्धा की ज्योति सदैव प्रज्वलित रह सकती है।

यह यज्ञ अपनी सनातन सांस्कृतिक विरासत के प्रति देशवासियों की आस्था को पोषित करने का माध्यम बना। गणमान्य अतिथियों सहित सभी याजकों ने देश की सुख, समृद्धि, एकता, अखण्डता के लिए प्रार्थना की। सभी ने देश के लिए मर-मिटने वाले अमर बलिदानियों को नमन करते हेतु उन्हें भावभीनी श्रद्धाञ्जलि दी।

कोपेनहैगन में घर-घर पहुँचा युगऋषि का संदेश

युवा युगनायक आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी अपने कोपेनहैगन के प्रवास में ऋषि संदेश पहुँचाने, युग चेतना का दीप जलाने एवं जन्मशताब्दी वर्ष 2026 के लक्ष्य बताने अनेक घरों में गए। इस आत्मीयतापूर्ण श्रद्धा संवर्धन जनसंपर्क अभियान ने वहाँ सक्रिय युगसृजेताओं को एक नई ऊर्जा, नया विश्वास दिया। डॉ. चिन्मय जी ने सभी परिजनों से वर्तमान समय की आवश्यकता समझते हुए युग निर्माण सत्संकल्प अभियान तथा व्यक्तिगत एवं सामूहिक साधना पुरुषार्थ को गति देने का आह्वान किया।

परिजनों ने भी ऋषियुग्म के प्रति अपने भाव-विचार साझा किए तथा मिशन को गति देने के नूतन संकल्प लिए।

भावभरी श्रद्धाञ्जलि

श्री बद्रीदास वैष्णव, लीलियाँ, नागौर। राजस्थान

गायत्री शक्तिपीठ लीलियाँ के संस्थापक श्री बद्रीदास वैष्णव जी का दिनांक 8 मई 2025 को 92 वर्ष की आयु में देहावसान हो गया। उनकी मिशन निष्ठा और यज्ञकुण्ड के निर्माण में विशेषज्ञता को देखते हुए परम पूज्य गुरुदेव ने उन्हें और उनके साथी श्री गंगाबिशन जी को 'नल और नील' की संज्ञा दी थी। वे वेद, पुराण, उपनिषद् रामायण, महाभारत आदि ग्रंथों के मर्मज्ञ थे। उनकी न्यायनिष्ठा को देखते हुए गाँवों में लोग अपने विवादों को सुलझाने के लिए बुलाया करते थे। उन्होंने आसपास के अनेक गाँवों में यज्ञ कराए, भारतीय संस्कृति ज्ञान परीक्षा का विस्तार किया।

स्व. बद्रीदास जी

प्रवेश प्रारंभ

देव संस्कृति विश्वविद्यालय

विश्वविद्यालय अनुदान आयोग द्वारा मान्यता प्राप्त, राष्ट्रीय मूल्यांकन एवं प्रत्यायन परिषद द्वारा प्रत्यायित एवं आईएसओ 9001 : 2015 एवं 45001 : 2018 द्वारा प्रमाणित

ऑनलाइन आवेदन : www.dsvv.ac.in @dsvvofficial

परीक्षा केन्द्र भोपाल (म.प्र) हरिद्वार (उत्तराखण्ड) कोलकाता (प.बंगाल) लखनऊ (उ.प्र) नोएडा (उ.प्र.) नागपुर (महाराष्ट्र) पटना (बिहार) राजनांदगाँव (छ.ग.)

बीएड कार्यक्रम के लिए मात्र देव संस्कृति विश्वविद्यालय, हरिद्वार ही परीक्षा केन्द्र है।

स्नातक उपाधि पाठ्यक्रम 4 वर्ष

बी.एससी.	इन्फॉर्मेशन टेक्नोलॉजी (ऑनर्स)
बी.सी.ए.	बैचलर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (ऑनर्स)
बी.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट (ऑनर्स)
बी.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंचार (ऑनर्स)
बी.वोक.	3डी एनीमेशन एण्ड वीएफएक्स (ऑनर्स)
बी.आर.एस.	बैचलर ऑफ रूरल स्टडीज (ऑनर्स)
बी.ए.	अंग्रेजी (ऑनर्स)
बी.ए.	मनोविज्ञान (ऑनर्स)
बी.एससी.	योग विज्ञान (ऑनर्स)
बी.ए.	संस्कृत (ऑनर्स)
बी.ए.	हिन्दी (ऑनर्स)
बी.ए.	संगीत-गायन (ऑनर्स)
बी.ए.	संगीत इंस्ट्रुमेंट-मृदंग/तबला (ऑनर्स)
बी.ए.	इतिहास (ऑनर्स)

बी.एड. बैचलर ऑफ एजुकेशन **2 वर्ष**

पी.जी. डिप्लोमा पाठ्यक्रम 1 वर्ष

- पी.जी. डिप्लोमा-मानव चेतना, योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (केवल विदेशी विद्यार्थियों हेतु)

सर्टिफिकेट पाठ्यक्रम 6 माह

प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम - योग एवं वैकल्पिक चिकित्सा (केवल विदेशी विद्यार्थियों हेतु)

स्नातकोत्तर उपाधि पाठ्यक्रम 2 वर्ष

एम.सी.ए.	मास्टर ऑफ कम्प्यूटर एप्लीकेशन (डाटा साइंस)
एम.बी.ए.	टूरिज्म एण्ड ट्रेव्हल मैनेजमेण्ट
एम.ए.	पत्रकारिता एवं जनसंचार
एम.ए./एम.एससी.	काउंसलिंग मनोविज्ञान
एम.ए.	हिन्दू अध्ययन
एम.ए.	दर्शनशास्त्र
एम.एससी.	योग चिकित्सा
एम.ए./एम.एससी.	मानव चेतना एवं योग विज्ञान
एम.ए./एम.एससी.	स्वदेशी एवं पारंपरिक चिकित्सा पद्धतियाँ
एम.ए.	संस्कृत
एम.ए.	हिन्दी
एम.ए.	संगीत-गायन
एम.ए.	संगीत-तबला, पखावज
एम.ए.	इतिहास एवं भारतीय संस्कृति

स्नातकोत्तर (केवल शोध) पाठ्यक्रम 1 वर्ष

एम.ए. -	आध्यात्मिक पत्रकारिता
एम.एससी.	-हर्बल चिकित्सा और प्राकृतिक उत्पाद रसायन शास्त्र
एम.एससी.	- आणविक शारीरिकी और पारंपरिक स्वास्थ्य विज्ञान
एम.एससी.	- बच्चों के विकास और पीढ़ीगत प्रवृत्तियों के लिए स्वदेशी दृष्टिकोण
एम.ए./एम.एससी.	भारतीय ज्ञान प्रणाली
एम.एससी.	पारंपरिक स्वास्थ्य विज्ञान

आवेदन फॉर्म हेतु : • **ऑनलाइन आवेदन**- http://www.dsvv.ac.in (शुल्क ₹ 1200/-)
• **ऑफलाइन आवेदन**- आवेदक कैम्पस से संपर्क कर सकते हैं।
• प्रत्येक आवेदक एक ही पाठ्यक्रम के लिए आवेदन कर सकता है। **(बीएड के अतिरिक्त)**
• प्रवेश प्रक्रिया एवं अन्य विस्तृत जानकारियाँ विश्वविद्यालय की विवरणिका एवं वेबसाइट पर उपलब्ध हैं।
(ऑनलाइन आवेदन के लिए संलग्न QR कोड स्कैन कीजिए।)

QR code

कुलसचिव : देव संस्कृति विश्वविद्यालय, गायत्रीकुञ्ज-शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार-249411 (उत्तराखण्ड)
फोन : (01334) 261367 (Ext.: 5407, 5524) **ईमेल** : **admissions@dsvv.ac.in**
वेब : www.dsvv.ac.in **मोबाइल** : +91-9258360763, 9258369877, 9258369612, 9720107192

आदरणीय डॉ. चिन्मय जी का पर्थ (ऑस्ट्रेलिया) प्रवास

(.....पृष्ठ 6 के शेष समाचार)

संगठन मजबूत हुआ

आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी का यह प्रवास गायत्री परिवार से जुड़े परिजनों को परस्पर परिचित और संगठित करने का माध्यम बना। भारत और पूरे विश्व में फैले रिश्तेदारों, परिचितों से लोगों को जब डॉ. चिन्मय जी के आगमन का संदेश मिला तो वे उनसे मिलने आए। दशकों से नगर में रहने के बावजूद जो एक-दूसरे से परिचित नहीं थे, उन्हें परस्पर परिचय करने का अवसर मिला, देवपरिवार का विस्तार हुआ। अद्भुत संयोग एवं सुयोग से पर्थ में गायत्री परिवार की नींव को मजबूती मिली।

आद. डॉ. चिन्मय जी के संपर्क अभियान के अंतर्गत पर्थ में मिशन के साथ जुड़ी दूसरी और तीसरी पीढ़ी के सैकड़ों परिजनों से संपर्क हुआ। लोग गुरुदेव-माताजी एवं श्रद्धेय डॉ. साहब, जीजी से जुड़े संस्मरण सुनाते हुए स्वयं को बड़े सौभाग्यशाली और धन्य अनुभव कर रहे थे।

उद्यमी युवाओं का सम्मेलन

26 अप्रैल को गायत्री परिवार के प्रति समर्पित युवा प्रोफेशनल्स का सम्मेलन हुआ। युग निर्माण योजना, अखण्ड ज्योति एवं परम वंदनीया माताजी का जन्मशताब्दी वर्ष जैसे अनेक विषयों पर चर्चा एवं मार्गदर्शन का क्रम सम्पन्न हुआ। आदरणीय डॉक्टर चिन्मय पण्ड्या जी के व्यक्तित्व से सभी बहुत प्रभावित हुए। अपने आदर्श के रूप में उनसे सतत मार्गदर्शन लेते रहने और गायत्री परिवार की गतिविधियों से जुड़ने का भाव सभी ने व्यक्त किया।

ऊपर पारिवारिक गोष्ठी, नीचे उद्यमी युवाओं का सम्मेलन

विचारों की शक्ति अकूत है। संसार पर शासन मनुष्य नहीं, विचार करते हैं। -स्मिथ

उत्तराखण्ड के शिक्षण संस्थानों में समान नागरिक संहिता संबंधी जागरूकता कार्यशालाओं का शुभारंभ

माननीय मुख्यमंत्री जी ने देव संस्कृति विश्वविद्यालय से किया शुभारंभ

"शान्तिकुञ्ज, देसंविवि से राष्ट्र निर्माण की चेतना प्रवाहित होती है।"
- माननीय मुख्यमंत्री, उत्तराखण्ड

उच्च शिक्षा विभाग एवं देव संस्कृति विश्वविद्यालय के संयुक्त तत्त्वावधान में दिनांक 3 मई को देव संस्कृति विश्वविद्यालय में 'अखंड भारत में समान नागरिक संहिता के परिप्रेक्ष्य में नागरिक कर्त्तव्य' विषय पर कार्यशाला का आयोजन हुआ। मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी, उच्च शिक्षा मंत्री डॉ. धन सिंह रावत जी एवं देसंविवि के प्रति कुलपति डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीप प्रज्वलन कर इसका शुभारंभ किया।

माननीय मुख्यमंत्री जी ने शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय की दिव्यता का अभिनन्दन करते हुए कहा कि जिस प्रकार माँ गंगा देवभूमि उत्तराखंड से निकलकर पूरे भारत को पवित्र करती हैं, उसी प्रकार यूसीसी उत्तराखंड की भूमि से निकलकर पूरे भारत में लागू होगा। उन्होंने यूसीसी की विशेषताएँ बताने के साथ कहा कि शान्तिकुञ्ज, देसंविवि से राष्ट्र निर्माण की चेतना प्रवाहित होती है। यह चेतना यूसीसी के विषय में भ्रांति फैलाने वालों को रोकने एवं यूसीसी के सही पहलुओं को जन-जन तक पहुँचाने में महत्त्वपूर्ण योगदान देगी।

दीप प्रज्वलन करते माननीय मुख्यमंत्री श्री पुष्कर सिंह धामी, उनके दायें माननीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी और माननीय श्री धनसिंह रावत, उच्च शिक्षा मंत्री उत्तराखण्ड सरकार

देसंविवि के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने उत्तराखण्ड में समान नागरिक संहिता लागू करने और देव संस्कृति विश्वविद्यालय से शिक्षण संस्थानों में जागरूकता अभियान आरंभ किये जाने का स्वागत किया। उन्होंने यूसीसी को परम पूज्य गुरुदेव द्वारा दिये गए नवयुग के संविधान 'युग निर्माण सत्संकल्प' के अनुरूप बताया, जो भारत की एकता, अखंडता एवं समता के प्रति निष्ठावान रहने और अपने नागरिक कर्त्तव्यों का जिम्मेदारीपूर्वक निर्वहन करने की प्रेरणा देता है।

माननीय उच्च शिक्षा मंत्री श्री धन सिंह रावत जी ने बताया कि पूरे उत्तराखंड में 12 सरकारी विश्वविद्यालय एवं 25 निजी विश्वविद्यालय हैं। आने वाले 100 दिनों में 40 एक दिवसीय कार्यशालाओं का आयोजन कर इनमें अध्ययन कर रहे 5 लाख से अधिक विद्यार्थियों तक संदेश पहुँचाया जाएगा।

इससे पूर्व माननीय प्रति कुलपति जी ने मुख्यमंत्री, उच्च शिक्षा मंत्री एवं सभी सम्मानित अतिथियों का गायत्री महामंत्र लिखित चादर, युगसाहित्य, प्रतीक चिह्न आदि भेंटकर सम्मानित किया। कार्यशाला में यूसीसी आधारित विभिन्न प्रतियोगिताओं के विजेताओं को प्रमाण पत्र देकर मंचासीन अतिथियों ने सम्मानित किया।

इस अवसर पर उच्च शिक्षा सचिव. डॉ. रणजीत सिन्हा, यूसीसी ड्राफ्ट समिति के सदस्य श्री मनु गौड़, दून विश्वविद्यालय की कुलपति डॉ. सुरेखा डंगवाल, राज्य सलाहकार समिति, आपदा प्रबंधन विभाग के उपाध्यक्ष श्री विनय रूहेला, शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, कुलपति श्री शरद पारधी की उल्लेखनीय उपस्थिति रही।

कार्यशाला में समान नागरिक संहिता से जुड़े विभिन्न पहलुओं पर विभिन्न सत्रों का आयोजन किया गया। इनमें यूसीसी ड्राफ्ट समिति के सदस्य श्री मनु गौड एवं दून विश्वविद्यालय के कुलपति प्रो. सुरेखा डंगवाल ने यूसीसी के सभी महत्त्वपूर्ण पहलुओं की विस्तार से जानकारी दी।

श्रद्धेया शैल जीजी से मिले माननीय मुख्यमंत्री जी

मुख्यमंत्री माननीय श्री पुष्कर सिंह धामी जी एवं उनके सहयोगियों ने शान्तिकुञ्ज आकर कुलाधिपति श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी एवं श्रद्धेया शैल जीजी से भेंट की। इस अवसर पर उन्होंने उत्तराखण्ड की सनातन आध्यात्मिक चेतना के विकास और सांस्कृतिक उत्कर्ष से संबंधित विषयों पर चर्चा की, श्रद्धेया जीजी का आशीर्वाद लिया। श्रद्धेया जीजी ने अतिथियों को युगसाहित्य एवं गायत्री मंत्र का उपवस्त्र भेंट कर सम्मानित किया।

सैनिकों और जरूरतमंदों की जीवनरक्षा के लिए स्वैच्छिक रक्तदान शिविर

26 किशोरों ने प्रथम बार रक्तदान कर अपनी सेवाभावना का परिचय दिया

175 यूनिट रक्तदान हुआ

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज के आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में दिनांक 16 मई 2025 को स्वैच्छिक रक्तदान शिविर का आयोजन हुआ। इसमें 175 से अधिक शांतिकुञ्जवासियों ने रक्तदान कर मानव सेवा का अनुकरणीय उदाहरण प्रस्तुत किया। यह रक्तदान शिविर माँ गंगे ब्लड सेंटर, कनखल के सहयोग से आयोजित किया गया था।

शान्तिकुञ्ज महिला मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने दीप प्रज्वलन कर रक्तदान शिविर का शुभारंभ किया। उन्होंने बताया कि इस शिविर का आयोजन सीमाओं पर तैनात जवानों व जरूरतमंदों की जीवन की रक्षा के लक्ष्य के साथ किया गया है।

प्रथम रक्तदाता पहली बार रक्तदान कर रही कु. आहुति पण्ड्या रहीं। उनके साथ राष्ट्रसेवा के भाव से 26 युवाओं ने भी पहली बार रक्तदान किया। शान्तिकुञ्ज की चिकित्सा विभाग प्रभारी डॉ. मंजू चोपदार एवं व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि ने इसे प्रेरणादायक पहल बताया। ब्लड सेंटर प्रभारी एन.एस. नेगी ने गायत्री परिवार की राष्ट्रनिष्ठा और सेवाभावना की सराहना की। रक्तदान शिविर की सफलता में शान्तिकुञ्ज के आपदा प्रबंधन दल एवं चिकित्सा विभाग के प्रमुख सदस्य श्री अजय त्रिपाठी, श्री मंगल सिंह गढ़वाल, श्री गोपाल रजक, संदीप गोस्वामी आदि ने विशेष भूमिका निभाई।

व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि, महिला मण्डल प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या और शिविर के आयोजन में सहयोगी शान्तिकुञ्ज तथा माँ गंगे ब्लड सेंटर का चिकित्सक दल, दायें रक्तदान करते शान्तिकुञ्ज के अंतेवासी कार्यकर्त्ता

शान्तिकुञ्ज में 30 अप्रैल और 14 मई को आयोजित हुए निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर

मेदान्ता हॉस्पिटल, गुरुग्राम के चिकित्सकों ने प्रदान की सेवाएँ

30 अप्रैल 2025, अक्षय तृतीया के पावन दिन शान्तिकुञ्ज, देव संस्कृति विश्वविद्यालय तथा गुरुग्राम, एनसीआर के सुप्रसिद्ध मेदांता अस्पताल के संयुक्त तत्त्वावधान में शान्तिकुञ्ज स्थित आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन किया गया। देव संस्कृति विश्वविद्यालय के प्रति कुलपति आदरणीय डॉ. चिन्मय पण्ड्या जी ने दीप प्रज्वलन कर शिविर का शुभारंभ किया। तत्पश्चात् उन्होंने सेवार्थ पधारे चिकित्सकों का स्वागत, अभिनन्दन मंत्र चादर भेंट करते हुए किया। इस स्वास्थ्य परीक्षण शिविर में जनरल फिजिशियन, कार्डिओलॉजिस्ट, सीनियर कंसल्टेंट स्ट्रोक आदि विशेषज्ञों ने सेवाएँ प्रदान कीं।

245 लोगों ने लाभ लिया

मेदांता हॉस्पिटल (गुरुग्राम) के सहयोग से दिनांक 14 मई को पुनः आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय, शान्तिकुञ्ज में निःशुल्क स्वास्थ्य परीक्षण शिविर का आयोजन हुआ। चिकित्सालय प्रभारी डॉ. मंजुश्री चोपदार ने बताया कि इस शिविर में शान्तिकुञ्ज, हरिपुर कलाँ, भूपतवाला सहित आसपास के क्षेत्रों से आए 245 लोगों ने स्वास्थ्य परीक्षण कराया। सभी लाभार्थियों को विशेषज्ञ चिकित्सकों के परामर्श के आधार पर शान्तिकुञ्ज की ओर से निःशुल्क दवाइयाँ भी दी गईं।

इस शिविर में मेदांता हॉस्पिटल के डॉ. हिमांशु पुनिया (कार्डियोलॉजिस्ट), डॉ. रमेश झा (इंटरनल मेडिसिन), डॉ.जीतेन्द्र वर्मा के नेतृत्व में 14 सदस्यीय टीम ने सेवाएँ प्रदान कीं। आचार्य श्रीराम शर्मा शताब्दी चिकित्सालय की ओर से डॉ. अमरनाथ सारस्वत, डॉ. गोपीवल्लभ पाटीदार एवं समस्त स्टाफ भी परीक्षण एवं विविध सेवाकार्यों में सहयोगी रहा।

केरल के परिजनों के लिए
जीवन साधना सत्र

गायत्रीतीर्थ शान्तिकुञ्ज में 20 से 27 अप्रैल 2025 की तिथियों में केरल से आये 67 परिजनों का जीवन साधना सत्र सम्पन्न हुआ। 15 वर्ष से लेकर 70 वर्ष आयु तक के श्रद्धालु/साधक इस शिविर में शामिल हुए। नौ दिवसीय शिविर में **गायत्री साधना क्यों और कैसे**?, गुरुतत्त्व का महत्त्व और दीक्षा संस्कार, यज्ञ अभियान, मण्डल गठन, विभिन्न संस्कारों के आयोजन जैसे विषयों पर विस्तार से मार्गदर्शन दिया गया। शान्तिकुञ्ज व्यवस्थापक श्री योगेन्द्र गिरि जी, जो केरल प्रान्त के प्रभारी भी हैं, ने युग निर्माण सत्संकल्प पर विशेष उद्बोधन दिया। शिविर संयोजन दक्षिण जोन प्रभारी श्री परमानन्द द्विवेदी एवं उनके साथियों ने किया। शिविर में **10 प्रज्ञा मण्डल एवं 2 महिला मण्डलों का गठन हुआ।** श्रद्धेया शैल जीजी के स्नेहाशीष पाकर सभी गद्गद हुए।

गायत्री विद्यापीठ, शान्तिकुञ्ज का उत्साहवर्धक परीक्षा परिणाम

गायत्री विद्यापीठ शान्तिकुञ्ज का कक्षा बारहवीं का सीबीएसई बोर्ड परीक्षा परिणाम उत्साहजनक रहा। कक्षा 12 के 9 विद्यार्थियों ने 90 प्रतिशत से अधिक अंक लेकर एक बार पुनः गायत्री विद्यापीठ का नाम रोशन किया। आन्या सुखीजा ने 98.4%, तनिशा गुसाईं ने 97.4%, कनक ने 95.6% अंकों के साथ क्रमशः प्रथम, द्वितीय और तृतीय स्थान प्राप्त किया।

कक्षा दस में अंकित पंत को 93.8% तथा जवा गौतम और दिवांशी चौहान को 91.6 % अंक मिले।

गायत्री विद्यापीठ के अभिभावकद्वय श्रद्धेय डॉ. प्रणव पण्ड्या जी, श्रद्धेया शैल जीजी एवं विद्यापीठ व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी सहित सभी शिक्षकों ने बच्चों को उज्ज्वल भविष्य के लिए शुभकामनाएँ देते हुए उनका उत्साहवर्धन किया। व्यवस्था मण्डल की प्रमुख श्रीमती शेफाली पण्ड्या जी ने कहा कि गायत्री विद्यापीठ केवल एक शैक्षणिक संस्थान नहीं, बल्कि विद्यार्थियों के सर्वांगीण विकास के लिए प्रतिबद्ध है।

श्रीमती शैलबाला पण्ड्या शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार स्वामी श्री वेदमाता गायत्री ट्रस्ट (टीएमडी) गायत्री नगर, श्रीरामपुरम, शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार द्वारा प्रकाशित तथा उत्तर भारत लाइव, एच.सी.एल. कम्पाउण्ड, सहारनपुर रोड़, निरंजनपुर, देहरादून-248001 (उत्तराखंड) में मुद्रित। **संपादक**- प्रमोद शर्मा। **पता** :- शान्तिकुञ्ज, हरिद्वार (उत्तराखंड), पिन 249411. फोन-(01334) 260602

सम्पर्क सूत्र : पंजीयन एवं पूछताछ
फोन : 01334-311004, 9258369725
ईमेल : pragyaabhiyan@awgp.in
समाचार प्रेषण : news@awgp.org

Publication date: 27.05.2025
Place: Shantikunj, Haridwar
RNI-NO.38653/ 1980
Postel R.No. UA/DO/DDN/ 16 / 2024-26
Licenced to Post Without Prepayment vide WPP No. 04/2024-26